खण्ड-441, अंक-1
मंगलवार, 24 वैशाख, शक संवत् 1924
(14 मई, 2002 ई0)

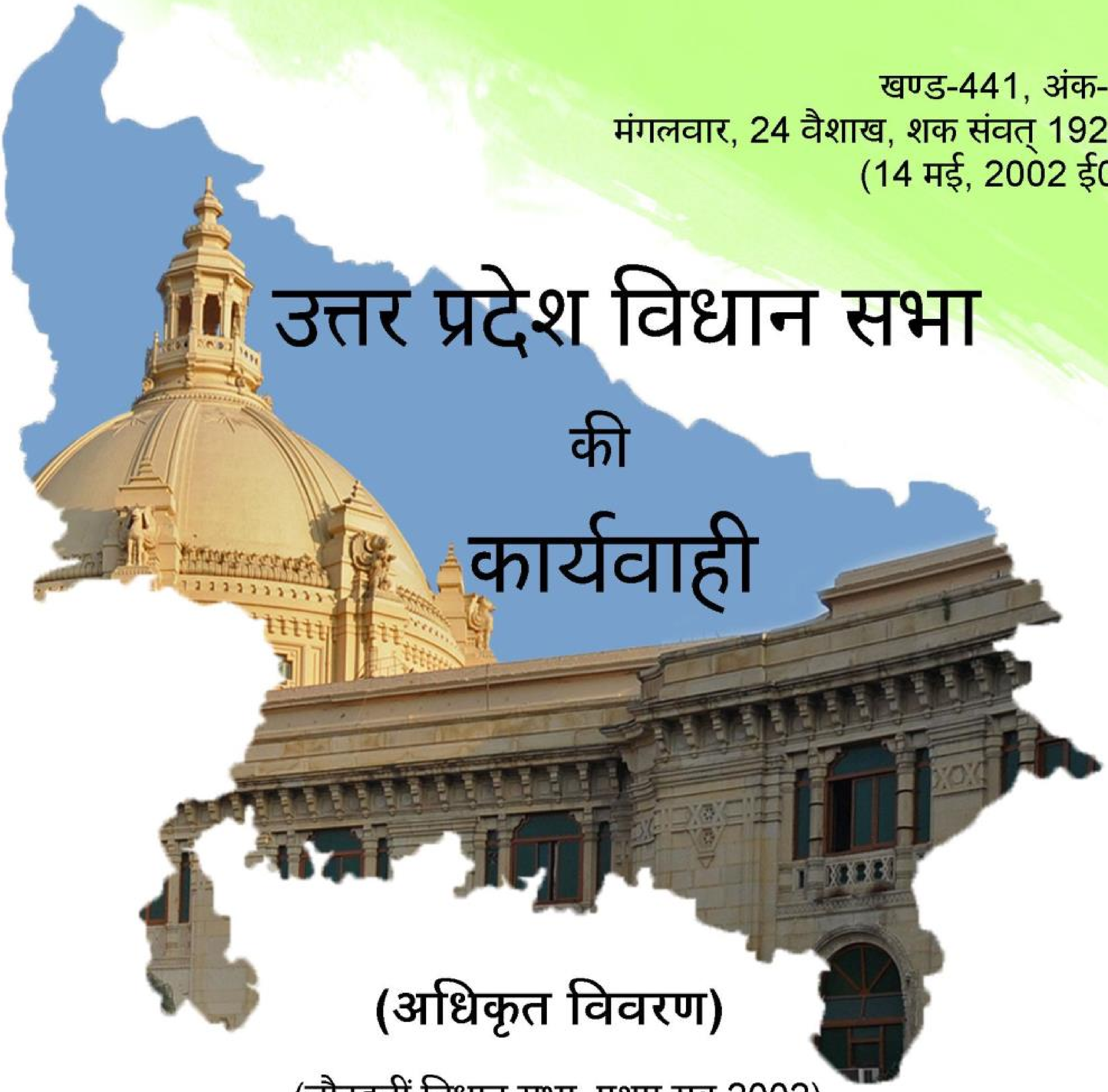

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(चौदहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 2002)

खण्ड 441 में 8 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
2002

मूल्य : बिना महसूल रु0 16.75 पैसे, महसूल सहित रु0 21.00 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल रु0 586.25 पैसे, महसूल सहित रु0 724.25 पैसे |

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों की सूची...	क–च
महामहिम राज्यपाल, मंत्रि-परिषद्, नेता विरोधी दल, उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल की सूची	छ–ञ
उपस्थित सदस्य	ट–ठ
अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए श्री राज्यपाल द्वारा श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 'हरीश जी' सदस्य विधान सभा की नियुक्ति की सूचना ...	1
विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन	1
नव निर्वाचित अध्यक्ष, विधान सभा, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को बधाई ...	2–17

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों की सूची

(चौदहवीं विधान सभा)

1– अकीलुर्रहमान खां, श्री — मुरादाबाद
2– अक्षयवर लाल, श्री — श्रावस्ती
3– अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
4– अजय कपूर, श्री — कानपुर नगर
5– अजय कुमार, श्री — बागपत
6– अजय राय, श्री — वाराणसी
7– अजीत कुमार उर्फ राजू यादव, श्री — बदायूं
8– अजीम भाई, श्री — फिरोजाबाद
9– अतीक अहमद श्री — इलाहाबाद
10– अनवर महमूद, श्री — बलरामपुर
11– अनार सिंह दिवाकर, श्री — एटा
12– अनिल कुमार, श्री — बुलन्दशहर
13– अनिल कुमार पाण्डेय, श्री — सुल्तानपुर
14– अनिल कुमार मौर्य, श्री — मिर्जापुर
15– अनिल कुमार वर्मा, श्री — सीतापुर
16– अनिल कुमार वर्मा, श्री — हरदोई
17– अनिल कुमार सिंह यादव, श्री — एटा
18– अनिल, श्री — सिद्धार्थनगर
19– अनीस अहमद खां उर्फ फूलबाबू, श्री — पीलीभीत
20– अनुग्रह नारायण उर्फ खोखा सिंह, श्री — देवरिया
21– अनुराधा चौधरी, सुश्री — मुजफ्फरनगर
22– अनूप कुमार पाण्डेय, श्री — बस्ती
23– अन्सार अहमद, श्री — इलाहाबाद
24– अब्दुल कलाम, श्री — वाराणसी
25– अब्दुल कलाम, श्री — सन्त कबीर नगर
26– अब्दुल मन्नान, श्री — हरदोई
27– अब्बास अली जैदी उर्फ रूसदी मियां, श्री — बाराबंकी
28– अमरजीत सिंह जनसेवक, श्री — फतेहपुर
29– अमरमणि, श्री — महराजगंज
30– अमर सिंह यादव पुत्र श्री सुन्दर सिंह, श्री — हाथरस
31– अमिता सिंह, श्रीमती — सुल्तानपुर
32– अम्बिका चौधरी, श्री — बलिया
33– अम्बेश कुमारी, श्रीमती — महोबा
34– अयोध्या प्रसाद पाल, श्री — फतेहपुर
35– अरविन्द गिरि, श्री — खीरी
36– अरुण कुमार मेहरोत्रा, डा० — जालौन
37– अरुण कुमारी, सुश्री — कानपुर देहात
38– अरुणवीर सिंह, श्री — बहराइच
39– अरुणा तोमर, सुश्री — कानपुर नगर
40– अली बहादुर, श्री — बहराइच
41– अवधेश कुमार, श्री — शाहजहांपुर
42– अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
43– अशोक कुमार कटियार, श्री — कानपुर देहात
44– अशोक बाजपेयी, श्री — हरदोई
45– अशोक सिंह चौहान, श्री — मैनपुरी
46– आदित्य विक्रम सिंह (बोकू सिंह), श्री — सिद्धार्थनगर
47– आनन्द प्रकाश लोधी, श्री — फतेहपुर
48– आनन्द सेन, श्री — फैजाबाद
49– आर०एस० कुशवाहा, श्री — खीरी
50– आर० के० चौधरी, श्री — लखनऊ
51– आर० के० सिंह पटेल, श्री — चित्रकूट
52– आलम बदी, श्री — आजमगढ़
53– आलोक कुमार शाक्य, श्री — मैनपुरी
54– आशा किशोर, सुश्री — रायबरेली
55– आशीष यादव, श्री — बदायूं
56– आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री — बदायूं
57– इकबाल महमूद, श्री — मुरादाबाद
58– इन्द्रजीत सरोज, श्री — कौशाम्बी
59– इन्द्रदेव सिंह, डा० — बिजनौर
60– इलम सिंह, श्री — सहारनपुर
61– उदयभान करवरिया, श्री — इलाहाबाद
62– उदयभान सिंह, श्री — वाराणसी
63– उदयराज, श्री — उन्नाव
64– उमा किरन, श्रीमती — मुजफ्फरनगर
65– उमा शंकर कुशवाहा, श्री — गाजीपुर
66– ऊषा वर्मा, श्रीमती — हरदोई
67– ओइम्वेश, स्वामी — बिजनौर
68– ओमकार सिंह यादव, श्री — बदायूं

69– ओम प्रकाश, श्री — गाजीपुर
70– ओम प्रकाश, श्री — सीतापुर
71– ओम प्रकाश (ओ०पी० सिंह), श्री — सुल्तानपुर
72– ओम प्रकाश पाण्डेय, श्री — सुल्तानपुर
73– ओम प्रकाश सिंह, श्री — मिर्जापुर
74– ओमवती देवी, श्रीमती — बिजनौर
75– कपिल देव, श्री — मऊ
76– कमला प्रसाद रावत, श्री — बाराबंकी
77– कमलेश कुमार पासवान, श्री — गोरखपुर
78– कमलेश कुमार पाठक, श्री — कानपुर देहात
79– कमाल यूसुफ मलिक, श्री — सिद्धार्थनगर
80– कल्याण सिंह, श्री — अलीगढ़
81– कल्यान सिंह दोहरे, श्री — कन्नौज
82– काजिम अली खां उर्फ नवेद मियां, नवाब — रामपुर
83– कामेश्वर उपाध्याय, श्री — देवरिया
84– कालीचरन राजभर, श्री — गाजीपुर
85– काशीराम, श्री — रामपुर
86– किरण पाल कश्यप, श्री — मुजफ्फरनगर
87– किरणपाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
88– किशन लाल बघेल, सेठ — आगरा
89– कुतुबुद्दीन, श्री — बिजनौर
90– कुलदीप सिंह सेंगर, श्री — उन्नाव
91– कृष्ण कुमार सिंह उर्फ सतीश वर्मा, श्री — हरदोई
92– कृष्णानन्द, श्री — गाजीपुर
93– कृष्णा पासवान, सुश्री — फतेहपुर
94– केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री — इलाहाबाद
95– कैलाश, श्री — गाजीपुर
96– कैलाश चौरसिया, श्री — मिर्जापुर
97– कैलाश नाथ सिंह यादव, श्री — वाराणसी
98– कोविद कुमार, श्री — शाहजहांपुर
99– कौकब हमीद खां, श्री — बागपत
100– कौशल किशोर, श्री — खीरी
101– कौशल किशोर, श्री — लखनऊ
102– गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री — आगरा
103– गंगा बक्श सिंह, श्री — उन्नाव
104– गंगा भक्त सिंह, श्री — हरदोई
105– गया चरण दिनकर, श्री — बांदा
106– गीता सिंह, श्रीमती — बलरामपुर
107– गुलाब देवी, श्रीमती — मुरादाबाद
108– घनश्याम शुक्ल, श्री — गोण्डा
109– घूरा राम, श्री — बलिया
110– चन्द्र किशोर, श्री — महराजगंज
111– चन्द्रदेव राम यादव करैली, श्री — आजमगढ़
112– चन्द्र भद्र सिंह, श्री — सुल्तानपुर
113– चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री — श्रावस्ती
114– चितरंजन स्वरूप, श्री — मुजफ्फरनगर
115– चौधरी बाबूलाल, श्री — आगरा
116– छेदी राम, श्री — गाजीपुर
117– छोटे लाल, श्री — बाराबंकी
118– छोटे लाल वर्मा, श्री — आगरा
119– जगदम्बिका पाल, श्री — बस्ती
120– जगदीश नारायण (राय), श्री — जौनपुर
121– जगदीश मिश्र बाल्टी बाबा, श्री — कुशीनगर/पडरौना
122– जगदीश सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
123– जगदीस सोनकर, श्री — जौनपुर
124– जगन प्रसाद गर्ग, श्री — आगरा
125– जग्गराम, श्री — मुरादाबाद
126– जटाशंकर सिंह, श्री — बहराइच
127– जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री — फर्रुखाबाद
128– जय प्रकाश यादव, श्री — गोरखपुर
129– जय प्रताप सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
130– जयवीर सिंह, श्री — मैनपुरी
131– जयवीर सिंह, ठाकुर — अलीगढ़
132– जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भैया, श्री — गोरखपुर
133– जियाउद्दीन रिजवी, श्री — बलिया
134– ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री — महराजगंज
135– तेजपाल सिंह, श्री — मथुरा
136– दद्दू प्रसाद, श्री — चित्रकूट
137– दयाराम, श्री — कौशाम्बी
138– दया शंकर वर्मा, श्री — जालौन
139– दिनेश सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
140– दीनानाथ कुशवाहा, श्री — देवरिया
141– दीनानाथ भाष्कर, श्री — संत रविदास नगर भदोही
142– दुर्गा प्रसाद मिश्र, श्री — देवरिया

143–दुर्गा प्रसाद यादव, श्री आजमगढ़
144–देवकी नन्दन, श्री हाथरस
145–देव नरायन उर्फ जी०एम० सिंह, श्री गोरखपुर
146–देवेन्द्र नागपाल, श्री ज्योतिबाफूले नगर
147–देवेन्द्र प्रताप, श्री एटा
148–देवेन्द्र प्रताप सिंह, श्री रायबरेली
149–द्वारिका प्रसाद, श्री सन्त कबीर नगर
150–धनन्जय सिंह, श्री जौनपुर
151–धर्मपाल, सिंह, श्री गाजियाबाद
152–धर्मपाल सिंह, श्री बरेली
153–धर्मराज निषाद, श्री अम्बेडकर नगर
154–धर्म सिंह सैनी, श्री सहारनपुर
155–धर्मेन्द्र कुमार, श्री बरेली
156–धू राम, श्री हमीरपुर
157–नत्थू सिंह, श्री उन्नाव
158–नरेन्द्र कुमार, श्री गौतमबुद्धनगर
159–नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा० इलाहाबाद
160–नरेन्द्र सिंह, श्री सीतापुर
161–नरेन्द्र सिंह यादव, श्री फर्रुखाबाद
162–नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री गाजियाबाद
163–नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री हरदोई
164–नवाब सिंह नागर, श्री गौतमबुद्ध नगर
165–नारद राय, श्री बलिया
166–नूर मोहम्मद, श्री सुल्तानपुर
167–पकौड़ी लाल, श्री मिर्जापुर
168–परमेश्वर दयाल, श्री सोनभद्र
169–पारस नाथ यादव, श्री जौनपुर
170–पी०के० राय, डा० कुशीनगर/पडरौना
171–पीतम राम, श्री पीलीभीत
172–पूरन सिंह बुन्देला, श्री ललितपुर
173–पूर्णमासी देहाती, श्री कुशीनगर/पडरौना
174–प्रताप चौधरी, श्री हाथरस
175–प्रदीप माथुर, श्री मथुरा
176–प्रभु दयाल, श्री मेरठ
177–प्रभु नारायण, श्री वाराणसी
178–प्रमोद कुमार, श्री प्रतापगढ़
179–प्रमोद गौड़, श्री अलीगढ़
180–प्रागी लाल अहिरवार, श्री झांसी
181–प्रेम पाल सिंह यादव, श्री बदायूं
182–प्रेम लता कटियार, श्री कानपुर नगर
183–प्रेम सिंह, श्री मथुरा
184–फतेह बहादुर, श्री महराजंगज
185–फसीहा मुराद लारी उर्फ गजाला, श्रीमती देवरिया
186–फागू, श्री मऊ
187–बंशीधर राज, श्री खीरी
188–बलराम यादव, श्री आजमगढ
189–बादशाह सिंह, श्री हमीरपुर
190–बाबू राम, एम०काम०, श्री जालौन
191–बाबू लाल, श्री गोण्डा
192–बाबू लाल कुशवाहा, श्री बांदा
193–बिजय सिंह, श्री फर्रुखाबाद
194–बीजू पटनायक, श्री गाजीपुर
195–बीना भारद्वाज, श्रीमती रामपुर
196–बीरेन्द्र सिंह बुन्द भगत-राजा, श्री ललितपुर
197–बृजेन्द्र कुमार व्यास (डमडम महराज), श्री झांसी
198–बृजेन्द्र प्रताप सिंह, श्री जालौन
199–बैजनाथ, श्री मऊ
200–बैजनाथ दुबे, श्री गोण्डा
201–ब्रह्मा शंकर त्रिपाठी, श्री देवरिया
202–भगवत शरन गंगवार, श्री बरेली
203–भगेलू राम, श्री सुल्तानपुर
204–भरत, श्री बलिया
205–भरतेन्द्र सिंह, कुंवर बिजनौर
206–भूपेन्द्र सिंह, श्री बदायूं
207–मुंशीलाल गौतम, श्री बुलन्दशहर
208–मतेश चन्द्र सोनकर, श्री कौशाम्बी
209–मदन गोपाल वर्मा, श्री फतेहपुर
210–मदन चौहान, श्री गाजियाबाद
211–मदन भैया, श्री बागपत
212–मदन सिंह उर्फ सन्तोष कुमार, श्री इटावा
213–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री रायबरेली
214–मलिक मसूद, श्री आजमगढ़
215–मशहूद खां, श्री बलरामपुर
216–मस्तराम, श्री उन्नाव
217–महबूब अली, श्री ज्योतिबाफूलेनगर
218–महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा आगरा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

219– महेन्द्र कुमार सिंह, श्री — सीतापुर
220– महेन्द्र सिंह, श्री — अलीगढ़
221– महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
222– महेन्द्र सिंह राजपूत, श्री — इटावा
223– महेश चन्द्र, श्री — कानपुर देहात
224– महेश नारायण सिंह, श्री — इलाहाबाद
225– माता प्रसाद पाण्डेय, श्री — सिद्धार्थनगर
226– मान पाल सिंह, श्री — एटा
227– माया प्रसाद, श्रीमती — खीरी
228– मायावती, सुश्री — सहारनपुर
229– मिथिलेश कुमार, श्री — शाहजहांपुर
230– मुकुट बिहारी वर्मा, श्री — बहराइच
231– मुश्ताक सोलंकी, हाजी — कानपुर नगर
232– मूलचन्द, श्री — बिजनौर
233– मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
234– मोहन देव शंखवार, श्री — फिरोजाबाद
235– मो० आकिल उर्फ मुन्ना मियां, श्री — मुरादाबाद
236– मो० आजम खां, श्री — रामपुर
237– मो० इरशाद खां, श्री — लखनऊ
238– मोहम्मद बशीर, श्री — आगरा
239– मो० मुजतबा सिद्दीकी, श्री — इलाहाबाद
240– मो० रिजवान, श्री — मुरादाबाद
241– मो० शफीर, श्री — फतेहपुर
242– यशपाल चौधरी, श्री — खीरी
243– यशवन्त सिंह, डा० — मुजफ्फरनगर
244– याकूब, हाजी — मेरठ
245– योगेन्द्र कुमार, श्री — बदायूं
246– योगेश प्रताप सिंह उर्फ योगेश भइया, श्री — गोण्डा
247– रणवीर राणा, श्री — मेरठ
248– रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुं० — कुशीनगर/पडरौना
249– रतन लाल अहिरवार, श्री — झांसी
250– रमापति उर्फ रमाकान्त, श्री — कुशीनगर/पडरौना
251– रमेश कान्त लवानियां, श्री — आगरा
252– रमेश कुमार शर्मा, श्री — झांसी
253– रमेश चन्द विन्द, डा० — मिर्जापुर
254– रविन्द्र पुण्डीर, प्रो० — मेरठ
255– राकेश कुमार वर्मा, श्री — बाराबंकी
256– राकेश पाण्डेय, श्री — अम्बेडकर नगर
257– राकेश सचान, श्री — कानपुर देहात
258– राज किशोर सिंह, श्री — बस्ती
259– राजनाथ सिंह, श्री — बाराबंकी
260– राजपाल त्यागी, श्री — गाजियाबाद
261– राजपाल सिंह बालियान, श्री — मुजफ्फरनगर
262– राजपाल सिंह सैनी, श्री — मुजफ्फरनगर
263– राजरानी, सुश्री — बाराबंकी
264– राजलक्ष्मी वर्मा, श्रीमती — बाराबंकी
265– राजा राम, श्री — प्रतापगढ़
266– राजीव कुमार सिंह, श्री — बाराबंकी
267– राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री — प्रतापगढ़
268– राजेन्द्र प्रसाद, श्री — लखनऊ
269– राजेन्द्र सिंह चौहान, श्री — एटा
270– राजेन्द्र सिंह राणा, श्री — सहारनपुर
271– राजेश अग्रवाल, श्री — बरेली
272– राजेश कुमार, श्री — खीरी
273– राधा मोहन दास अग्रवाल, डा० — गोरखपुर
274– राधेश्याम, श्री — सीतापुर
275– राधेश्याम सिंह, श्री — कुशीनगर/पडरौना
276– राम अचल राजभर, श्री — अम्बेडकर नगर
277– राम इकबाल, श्री — बलिया
278– राम करन आर्य, श्री — बस्ती
279– राम किशुन, श्री — वाराणसी
280– राम कृपाल, श्री — इलाहाबाद
281– राम कृष्ण, श्री — सीतापुर
282– राम गोविन्द चौधरी, श्री — बलिया
283– रामजीत राजभर, श्री — वाराणसी
284– रामजी शुक्ला, श्री — औरैया
285– राम नरेश यादव, श्री — आजमगढ़
286– रामनाथ, श्री — प्रतापगढ़
287– राम पाल यादव, श्री — सीतापुर
288– राम प्रकाश त्रिपाठी, श्री — कन्नौज
289– राम प्रताप सिंह, श्री — गोण्डा
290– राम प्रसाद चौधरी, श्री — बस्ती
291– राम बाबू हरित, डा० — आगरा
292– राम विशुन आजाद, श्री — गोण्डा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

293– राम भुआल, श्री — गोरखपुर
294– रामलाल अकेला, श्री — रायबरेली
295– रामवीर उपाध्याय, श्री — हाथरस
296– रामवीर सिंह, श्री — फिरोजाबाद
297– राम शंकर पाल, श्री — उन्नाव
298– राम सेवक, श्री — सुल्तानपुर
299– राम स्वरूप सिंह, श्री — कानपुर देहात
300– राम स्वरूप सिंह, श्री — बिजनौर
301– रामहेत, श्री — सीतापुर
302– रामेश्वर सिंह यादव, श्री — एटा
303– रिजवान अहमद खां, श्री — ज्योतिबाफूलेनगर
304– रियाज अहमद, श्री — पीलीभीत
305– रेवती रमण सिंह, कुं० — इलाहाबाद
306– लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, डा० — मेरठ
307– लल्लू सिंह, श्री — फैजाबाद
308– लालजी टण्डन, श्री — लखनऊ
309– लालजी वर्मा, श्री — अम्बेडकर नगर
310– लाल बहादुर यादव, श्री — जौनपुर
311– लुईस खुर्शीद, श्रीमती — फर्रुखाबाद
312– वकार अहमद शाह, डा० — बहराइच
313– वसीम अहमद, श्री — आजमगढ़
314– विजय कुमार मिश्रा, श्री — सन्त रविदासनगर भदोही
315– विजय बहादुर पाल, श्री — फर्रुखाबाद
316– विजय सिंह, श्री — सोनभद्र
317– विजमा यादव, श्रीमती — इलाहाबाद
318– विजेन्द्र सिंह, श्री — हाथरस
319– विद्या चौधरी, श्रीमती — आजमगढ़
320– विद्या सागर गुप्ता, श्री — लखनऊ
321– विनय शाक्य, श्री — औरैया
322– विनोद कुमार उर्फ पण्डित सिंह, श्री — गोण्डा
323– विनोद कुमार यादव कक्का, श्री — इटावा
324– विनोद कुमार सिंह, श्री — जौनपुर
325– विनोद तिवारी, डा० — पीलीभीत
326– विमल कृष्ण अग्रवाल उर्फ पप्पी, श्री — बदायूं
327– विवेक बंसल, श्री — अलीगढ़
328– विशम्भर प्रसाद निषाद, श्री — बांदा
329– विश्राम सिंह यादव, श्री — हरदोई
330– वीरेन्द्र प्रताप सिंह, मुन्ना, श्री — शाहजहांपुर
331– वीरेन्द्र सिंह, श्री — बरेली
332– वीरेन्द्र सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
333– वीरेश्वर, श्री — अलीगढ़
334– वेदराम भाटी, श्री — बुलन्दशहर
335– शंख लाल मांझी, श्री — सन्त कबीर नगर
336– शचीन्द्र नाथ त्रिपाठी, श्री — सन्त रविदास नगर भदोही
337– शब्बीर, श्री — बहराइच
338– शमीमुल हक, श्री — मुरादाबाद
339– शरदवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
340– शहजिल इस्लाम, श्री — बरेली
341– शाकिर अली, श्री — देवरिया
342– शारदा देवी, श्रीमती — गोरखपुर
343– शारदा नन्द अंचल, श्री — बलिया
344– शारदा प्रसाद, श्री — चन्दौली
345– शाहिद मंजूर, श्री — मेरठ
346– शिव कुमार बेरिया, श्री — कानपुर देहात
347– शिव चरन, श्री — हमीरपुर
348– शिव तपस्या, श्री — चन्दौली
349– शिव पाल सिंह यादव, श्री — इटावा
350– शिव प्रताप उर्फ डा० शिव प्रताप यादव, श्री — बलरामपुर
351– शिवाकान्त ओझा, प्रोफेसर — प्रतापगढ़
352– शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री — महराजगंज
353– शिशुपाल सिंह यादव, श्री — एटा
354– शैलेन्द्र यादव "ललई", श्री — जौनपुर
355– श्याम सिंह अहेरिया, श्री — मथुरा
356– श्यामदेव राय चौधरी, श्री — वाराणसी
357– श्याम नारायन, श्री — महराजगंज
358– श्याम लाल रावत, श्री — सीतापुर
359– श्याम सुन्दर शर्मा, श्री — मथुरा
360– श्याम सूरत उपाध्याय, श्री — इलाहाबाद
361– संजय गर्ग, श्री — सहारनपुर
362– संजीव दरियाबादी, श्री — कानपुर नगर
363– संदीप अग्रवाल, श्री — मुरादाबाद
364– सतीश महाना, श्री — कानपुर नगर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

365– सत्य प्रकाश अग्रवाल (कैलाश डेरी वाले), श्री — मेरठ
366– सदल प्रसाद, श्री — गोरखपुर
367– सत्य नारायण, श्री — हरदोई
368– सन्ध्या कठेरिया, श्रीमती — मैनपुरी
369– समरपाल सिंह, श्री — बागपत
370– सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुं० — मुरादाबाद
371– सलिल विशनोई, श्री — कानपुर नगर
372– सिद्ध गोपाल साहू, श्री — महोबा
373– सियाराम सागर, डा० — बरेली
374– सीताराम निषाद, श्री — फैजाबाद
375– सुखदेव राजभर, श्री — आजमगढ़
376– सुख देवी वर्मा, श्रीमती — इटावा
377– सुन्दर लाल, श्री — उन्नाव
378– सुन्दर सिंह, श्री — बुलन्दशहर
379– सुरेन्द्र पाल वर्मा, डा० — बांदा
380– सुरेन्द्र प्रकाश गोयल, श्री — गाजियाबाद
381– सुरेन्द्र प्रताप, श्री — जौनपुर
382– सुरेन्द्र विक्रम सिंह, श्री — रायबरेली
383– सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री — वाराणसी
384– सुरेश कुमार खन्ना, श्री — शाहजहांपुर
385– सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री — लखनऊ
386– सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री — लखनऊ
387– सुल्तान बेग, श्री — बरेली
388– सुशील चौधरी, डा० — सहारनपुर
389– सूरज सिंह शाक्य, श्री — एटा
390– सोमारू राम सरोज, श्री — जौनपुर
391– सोवरन सिंह, श्री — मैनपुरी
392– स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री — रायबरेली
393– हरि ओम, श्री — फिरोजाबाद
394– हरि प्रताप सिंह, श्री — प्रतापगढ़
395– हरिशंकर तिवारी, श्री — गोरखपुर
396– हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 'हरीश जी', श्री — वाराणसी
397– हीरा लाल गौतम, श्री — आजमगढ़
398– हुकुम सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
399– होशियार सिंह, श्री — बुलन्दशहर
*400 –रिक्त — बुलन्दशहर
*401 –रिक्त — अम्बेदकर नगर
**402 –रिक्त — प्रतापगढ़
***403 –रिक्त — बरेली
404– पीटर फैन्थम, श्री — नाम-निर्देशित

* त्याग-पत्र के फलस्वरूप ।

** मतगणना स्थगित ।

*** मृत्यु के फलस्वरूप ।

उत्तर प्रदेश विधानसभा

महामहिम राज्यपाल

श्री विष्णुकान्त शास्त्री

मंत्रि-परिषद्

क्रमांक	नाम	कार्य विभाग (पोर्ट फोलियो)
1	2	3
1–कुमारी मायावती (मुख्य मंत्री)		सामान्य प्रशासन, गृह, गोपनें, नियुक्ति, कार्मिक, सूचना, निर्वाचन, वित्त, न्याय, विधायी, औद्योगिक विकास, बेसिक शिक्षा, ग्राम्य विकास, नियोजन, प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन, अम्बेडकर ग्राम विकास, राज्य सम्पत्ति, निर्यात प्रोत्साहन, उद्यान, अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ, भूमि विकास एवं जल संसाधन, परती भूमि विकास, संस्कृति, खेलकूद, लघु सिंचाई, विकलांग कल्याण, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, नागरिक सुरक्षा, युवा कल्याण, प्रान्तीय विकास दल, वाह्य सहायतित परियोजना।
2–श्री लालजी टण्डन		आवास, नगर विकास, पर्यटन, श्रम, पंचायती राज, संस्थागत वित्त, दुग्ध विकास, पशुधन, वैकल्पिक ऊर्जा।
3–श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी		परिवहन, पर्यावरण, आबकारी
4–श्री ओम प्रकाश सिंह		सिंचाई, गन्ना विकास, उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, भाषा, राष्ट्रीय एकीकरण, कार्यक्रम कार्यान्वयन।
5–श्री कैलाश नाथ सिंह यादव		विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
6–श्री राम प्रकाश त्रिपाठी		सहकारिता
7–श्री इन्द्रजीत सरोज		समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण, महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार।
8–श्री महेन्द्र अरिदमन सिंह		स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
9–श्री सुखदेव राजभर		संसदीय कार्य, वस्त्रोद्योग, रेशम उद्योग
10–श्री हुकुम सिंह		कृषि
11–श्री स्वामी प्रसाद मौर्य		खादी एवं ग्रामीण उद्योग
12–श्री कौकब हमीद		ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा
13–श्री रामवीर उपाध्याय		ऊर्जा, चिकित्सा शिक्षा
14–श्रीमती अनुराधा चौधरी		लोक निर्माण
15–श्री लाल जी वर्मा		सार्वजनिक उद्यम
16–श्री रवि गौतम		राजस्व
17–श्री ठाकुर जयवीर सिंह		वन
18–श्री बाबूराम एम० काम०		खाद्य एवं रसद
19–श्री धर्मवीर सिंह अशोक		कारागार, राजनैतिक पेंशन
20–श्री जगदीश नारायण राय		लघु उद्योग

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

क्रमांक नाम	कार्य विभाग (पोर्ट फोलियो)
1–डा० सीमा रिजवी	इलेक्ट्रानिक्स
2–श्री अनीस अहमद खान उर्फ फूलबाबू	कृषि शिक्षा
3–श्री अक्षयवर गौड़	होमगार्ड्स
4–श्री राम भुआल (निषाद)	पिछड़ा वर्ग कल्याण

नेता विरोधी दल,

श्री मोहम्मद आज़म खाँ

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल

अध्यक्ष

श्री केशरीनाथ त्रिपाठी

उपाध्यक्ष

रिक्त

सचिव

श्री राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

अधिष्ठाता मण्डल

1–श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी", सदस्य, विधान सभा, (वाराणसी),
2–डा० लक्ष्मीकान्त बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (मेरठ),
3–डा० सुरेन्द्र पाल वर्मा, सदस्य, विधान सभा (बांदा),
4–श्री भगेलू राम, सदस्य, विधान सभा (सुल्तानपुर),
5–डा० अशोक बाजपेयी, सदस्य, विधान सभा (हरदोई),
6–श्री सीताराम निषाद, सदस्य, विधान सभा (फैजाबाद),
7–डा० वकार अहमद शाह, सदस्य, विधान सभा (बहराइच),
8–श्री श्याम सूरत उपाध्याय, सदस्य, विधान सभा (इलाहाबाद),
9–श्री वीरेन्द्र सिंह, सदस्य, विधान सभा (मुजफ्फरनगर) ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 14 मई, 2002

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :—

1–अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
2–अतीक अहमद, श्री — इलाहाबाद
3–अनिल कुमार, श्री — बुलन्दशहर
4–अरुण कुमारी, सुश्री — कानपुर देहात
5–अरुणा तोमर, सुश्री — कानपुर नगर
6–आर० के० चौधरी, श्री — लखनऊ
7–आशुतोष मौर्य उर्फ राजू, श्री — बदायूं
8–उदय भान सिंह, श्री — वाराणसी
9–उदयराज, श्री — उन्नाव
10–ओम प्रकाश, श्री — सीतापुर
11–ओम प्रकाश (ओ०पी०सिंह), श्री — सुल्तानपुर
12–कैलाश चौरसिया, श्री — मिर्जापुर
13–जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री — फर्रुखाबाद
14–जय प्रताप सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
15–नरेन्द्र सिंह, श्री — रीवांपुर
16–नारद राय, श्री — बलिया
17–परमेश्वर दयाल, श्री — बदायूं
18–बादशाह सिंह, श्री — हमीरपुर
19–बिजय सिंह, श्री — फर्रुखाबाद
20–बीरेन्द्र सिंह बुन्द भगत-राजा, श्री — ललितपुर
21–बैजनाथ, श्री — मऊ
22–मयंकेश्वर शरण सिंह, श्री — रायबरेली
23–महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
24–महेश नारायण सिंह, श्री — इलाहाबाद
25–माता प्रसाद पाण्डेय, श्री — सिद्धार्थनगर
26–मुश्ताक सोलंकी, हाजी — कानपुर नगर
27–मोख्तार अंसारी, श्री — मऊ
28–राजपाल सिंह बालियान, श्री — मुजफ्फरनगर
29–राजरानी, सुश्री — बाराबंकी
30–रामनाथ, श्री — प्रतापगढ़
31–राम पाल यादव, श्री — सीतापुर
32–लुईस खुर्शीद, श्रीमती — फर्रुखाबाद
33–विजय कुमार मिश्रा, श्री — सन्त रविदासनगर भदोही
34–विजय सिंह, श्री — सोनभद्र
35–वीरेन्द्र सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
36–वीरेश्वर, श्री — अलीगढ़
37–शरदवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
38–सर्वेश कुमार उर्फ राकेश, कुं० — मुरादाबाद
39–सीताराम निषाद, श्री — फैजाबाद
40–सुरेन्द्र सिंह पटेल, श्री — वाराणसी

उत्तर प्रदेश विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 14 मई, 2002

[विधान सभा की बैठक सभा–मण्डप लखनऊ में अपराह्न 01 बजे अध्यक्ष (प्रोटेम) श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, 'हरीश जी' की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई ।]

अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिये श्री राज्यपाल द्वारा श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव 'हरीश जी' सदस्य, विधान सभा की नियुक्ति की सूचना

सचिव, विधान सभा–

मान्यवर, मैं आपकी अनुमति से श्री राज्यपाल के निम्नलिखित आदेश, दिनांक 04 मई, 2002 को पढ़कर सुनाता हूँ –

" 'भारत का संविधान' के अनुच्छेद 180 के खण्ड (1)द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करके मैं, विष्णुकान्त शास्त्री, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव "हरीश जी" को, जो निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी कैन्टोनमेन्ट, जनपद वाराणसी से विधान सभा के सदस्य हैं, उस समय तक के लिए जब तक कि संविधान के अनुच्छेद 178 के उपबन्धों के अनुसार विधान सभा द्वारा अध्यक्ष का निर्वाचन न कर लिया जाय, संविधान के अनुच्छेद 179 के द्वितीय परन्तुक के अधीन रहते हुए अध्यक्ष का पद रिक्त होने पर अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए नियुक्त करता हूँ।"

विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन

श्री अध्यक्ष (प्रोटेम)–

माननीय मुख्य मंत्री जी, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय मंत्रिगण विभिन्न दलों के माननीय नेतागण तथा माननीय सदस्यगण, जैसा कि माननीय सदस्यों को विदित है कि आज का दिन श्री अध्यक्ष पद के निर्वाचन हेतु नियत किया गया है । नियमानुसार नाम-निर्देशन-पत्र दिनांक 13 मई, 2002 के मध्याह्न 12.00 बजे के पूर्व तक आ जाने चाहिए थे । उक्त अवधि के भीतर जो वैध नाम–निर्देशन-पत्र प्राप्त हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है–

नाम निर्देशित अभ्यर्थी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, प्रस्थापक, सुश्री मायावती समर्थक श्री लालजी टण्डन दूसरा जो नाम-निर्देशन-पत्र में है उसमें भी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी अभ्यर्थी हैं प्रस्थापक श्री कौकब हमीद, समर्थक श्री हुकुम सिंह हैं । तीसरा जो नाम-निर्देशन-पत्र में है उसमें भी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी अभ्यर्थी हैं प्रस्थापक श्री प्रमोद कुमार हैं और समर्थक श्री राम नरेश यादव हैं, चौथा जो नाम-निर्देशन-पत्र है में उसमें भी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी अभ्यर्थी हैं प्रस्थापक श्री कल्याण सिंह हैं और समर्थक श्री श्यामदेव राय चौधरी हैं । पांचवां जो नाम-निर्देशन-पत्र में है उसमें भी वही अभ्यर्थी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी हैं प्रस्थापक श्री राजाराम हैं, समर्थक श्री घनश्याम शुक्ला हैं । छठा जो नाम-निर्देशन-पत्र में है उसमें भी अभ्यर्थी श्री केशरी नाथ त्रिपाठी हैं प्रस्थापक श्री अखिलेश कुमार सिंह हैं, समर्थक श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह हैं, उक्त सभी छः नाम-निर्देशन-पत्रों में एक ही नाम का प्रस्ताव है, अतः उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य–संचालन नियमावली, 1958 के नियम 8 के उप नियम (3) (क) के अनुसार इस निर्वाचन के लिए औपचारिक प्रस्ताव करना आवश्यक नहीं है और मैं माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को अध्यक्ष पद के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित किये जाने की घोषणा करता हूँ।

(मेजें थपथपाई गईं)

नव निर्वाचित अध्यक्ष, विधान सभा, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को बधाई

श्री अध्यक्ष (प्रोटेम)–

मैं माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित किये जाने पर बधाई देता हूँ। यह प्रसन्नता का विषय है कि श्री त्रिपाठी जी ने सबका विश्वास प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है, और इस विधान सभा ने भी सर्वसम्मति चुनाव करने की परम्परा को बनाए रखा है।

मैंने 13वीं विधान सभा के पाँच वर्षों में माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी को अध्यक्ष पद से सदन को चलाते हुए देखा है। यह विपक्ष को जहाँ नियमों और संसदीय मर्यादाओं का ध्यान दिलाते रहते हैं, वहीं वह सत्ता पक्ष को भी उनकी जिम्मेदारियों से अवगत कराते रहते हैं। अनेक अवसरों पर शोर–शराबे के बीच भी उनको कहते सुना है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों को सुनना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने इस बात पर सदैव बल दिया कि माननीय सदस्य अपनी उचित बातों को तर्कपूर्ण तरीकों से प्रस्तुत करें तथा चर्चाओं के माध्यम से ही समस्याओं का समाधान निकालने का प्रयत्न करें। मैं आशा करता हूँ कि उनका यह मार्गदर्शन इस सदन को निरन्तर मिलता रहेगा और माननीय सदस्यगण इसका अनुपालन करते रहेंगे।

संसदीय लोकतंत्र के विकास एवं उसके सुदृढ़ीकरण के लिए माननीय श्री त्रिपाठी जी ने कामनवेल्थ पार्लियामेन्ट्री एसोसिएशन के माध्यम से अनेक प्रयास किये हैं। उनकी लोकप्रियता का यह प्रमाण है कि 1977 से अब तक लगातार छः बार उत्तर प्रदेश विधान सभा सदस्य के लिए निर्वाचित होते आए हैं और इसी प्रकार से वह तीसरी बार उत्तर प्रदेश विधान सभा के निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं।

निर्वाचित अध्यक्ष केशरी नाथ त्रिपाठी जी स्वभाव से सरल और सादगी की प्रतिमूर्ति हैं, उनका छात्र जीवन प्रथम श्रेणी का रहा है। वह अपनी कुशाग्र-बुद्धि और विधिक–ज्ञान के कारण एक सफल अधिवक्ता बने। उनकी मेधा से निकले तर्क के तीर उच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों के लिए अकाट्य बन जाते थे। आप सिविल संवैधानिक एवं चुनाव कानून के विशेषज्ञ के रूप में एक ख्याति प्राप्त अधिवक्ता हैं। "दि रिप्रेजेन्टेशन आफ दि पीपुल ऐक्ट 1951" पर आपकी कमेन्ट्री अपने क्षेत्र की बहुप्रशंसित एवं महत्वपूर्ण पुस्तक है। माननीय श्री त्रिपाठी जी की साहित्य के प्रति भी अगाध श्रद्धा और अभिरुचि है। देश–विदेशों में भी उनकी रचनाओं की सराहना हुई है। राष्ट्र भाषा हिन्दी के अनन्य सेवी एवं एक संवेदनशील कवि के रूप में माननीय श्री त्रिपाठी जी के दो काव्य संग्रह "मनोनुकृति" तथा "आयुर्पंख" प्रकाशित हो चुके हैं। आपने 1999 में लन्दन में आयोजित छठे विश्व हिन्दी सम्मेलन में सक्रियतापूर्वक भाग लिया। श्री त्रिपाठी "उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान" के कार्यकारी अध्यक्ष भी हैं। वह मेधा के धनी, साहित्य-प्रेमी और विधिक तथा संसदीय ज्ञान के भण्डार हैं। माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को उनकी राजनैतिक एवं शैक्षणिक जगत में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए "चाणक्य", "भारत गौरव", "विकास पुरुष", "उत्तर प्रदेश रत्न" आदि उपाधियों से सम्मानित किया गया है।

एक राजनेता के रूप में माननीय श्री त्रिपाठी जनता को राजनैतिक प्रशिक्षण दिये जाने, विधान सभा द्वारा गम्भीर विचार विमर्श के पश्चात् जनता की समस्याओं का निदान करने एवं विधान मण्डल द्वारा अपनी सम्पूर्ण गरिमा के अनुकूल निष्ठा के साथ कार्य करने एवं विधान सभा में सदस्यों की समस्याओं का हल सदन में ही किये जाने के पक्षधर हैं। इस दिशा में आपकी सोच के फलस्वरूप तेरहवीं विधान सभा के कार्यकाल में माननीय सदस्यों को अपनी तथा अपने क्षेत्र की अनेकानेक समस्याओं को सदन के समक्ष प्रस्तुत करने तथा उनका समाधान कराने का अवसर मिला। प्रक्रिया संबंधी नियमों में संशोधन कर विधान सभा की अधिक बैठकें करने का निर्णय भी इस दिशा में आपके प्रयास का फल है। माननीय

श्री त्रिपाठी संसदीय समितियों के माध्यम से जनता की समस्याओं के अनुश्रवण एवं उनके निस्तारण के भी पक्षधर हैं । संसदीय समितियां कैसे प्रभावशाली बनें इस विषय पर माननीय श्री त्रिपाठी सदैव इस विचार के रहे हैं कि समितियों को अधिकाधिक बैठकें करके जन समस्याओं के निस्तारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए ।

मुझे विश्वास है कि मा० श्री त्रिपाठी जी की अध्यक्षता और मार्गदर्शन में यह सदन सुचारु रूप से चलेगा और इस कार्य में सदन के प्रत्येक सदस्य का सकारात्मक सहयोग प्राप्त होता रहेगा ।

माननीया मुख्य मंत्री जी नेता सदन तथा माननीय नेता विपक्ष से निवेदन करता हूँ कि नवनिर्वाचित अध्यक्ष माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी को लाकर अध्यक्ष आसन पर बिठायें ।

(इसके उपरान्त माननीया मुख्य मंत्री जी नेता सदन तथा माननीय नेता विपक्ष नवनिर्वाचित अध्यक्ष माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को अध्यक्ष आसन तक लायें । प्रोटेम स्पीकर ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष को शुभ कामनायें व बधाई देते हुए आसन ग्रहण कराया)

(इस समय 1 बजकर 10 मिनट पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी ने सदन का सभापतित्व ग्रहण किया)

श्री अध्यक्ष–

माननीया मुख्य मंत्री जी ।

* मुख्य मंत्री (कुमारी मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी, उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष पद के लिए आप निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं इसके लिए मैं पूरे सदन की ओर से और अपने दल की ओर से आपको हार्दिक बधाई देती हूँ । (सत्ता पक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट) मुझे पूरा विश्वास है कि माननीय सदस्य सदन को चलाने में आपको पूरा सहयोग देंगे ।

विचारों का मतभेद होते हुए भी माननीय सदस्यों का यह दायित्व बनता है कि जिस मकसद के लिए, जनता की आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर वह असेम्बली में चुनकर आये हैं तो वह अपनी बात सदन में रख सकें । इसके लिए शांति व्यवस्था बनाने में वह आपको सहयोग देंगे ऐसा मैं उनकी ओर से विश्वास दिलाना चाहती हूँ ।

जहाँ तक आपके परिचय का सवाल है, आपकी कार्यकुशलता के बारे में पूरा सदन अच्छी प्रकार से परिचित है । आप कानून के एक अच्छे ज्ञाता हैं । पिछली बार भी जब सरकार का गठन हुआ तो आपको इस पद पर आसीन होने का मौका मिला और पिछली सरकार का जो आपका तजुर्बा रहा है उसका यह सदन पूरा लाभ लेगा और कानून के एक अच्छे ज्ञाता होने के कारण आप संविधान की गरिमा को ध्यान में रखते हुए विधान सभा के जो नियम हैं तो उसके हिसाब से निष्पक्ष रूप से आप सदन को चलायेंगे । ऐसी आपसे उम्मीद रखते हुए, आपके निर्विरोध चुने जाने पर मैं पुनः आपको बधाई देते हुए अपनी बात समाप्त करती हूँ ।

नेता विरोधी दल(श्री मोहम्मद आजम खाँ)–

माननीय अध्यक्ष जी, तीसरी बार आप इस सदन में सबसे ऊंचे स्थान पर बैठे हैं । आपकी सलाहियत आपकी शिक्षा आपकी तालीम, आपका वतन, आपका अनुभव, आपका व्यक्तित्व, आपकी

---

* अध्यक्ष ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

शख्सियत इस कुर्सी की मोहताज नहीं थी । यह जरूर कहा जायेगा कि इस आसन पर इस उच्च स्थान पर पुरुषोत्तम दास टण्डन जी जैसे लोग बैठे हैं, उनका वतन भी इलाहाबाद था और इलाहाबाद जिसने बड़ी–बड़ी शख्सियतें पैदा कीं, आपको पैदा किया है, इसके लिए आपको और उस कोख को भी मुबारकबाद देना चाहिए जिनकी कोख से आप पैदा हुए हैं अर्थात् आपकी माता जी को और हम यह आशा करते हैं कि जो उम्मीदें हमने आपसे लगायी हैं, कल भी और आज भी, और आने वाले कल में भी, उसकी कसौटी पर आप पूरे उतरेंगे । बहुत से मौके ऐसे आयेंगे जब आपको लगेगा कि कहीं कोई ज्यादती हो रही है लेकिन ऐसा कब होगा, जब विपक्ष को यह लगेगा कि एक ऐसा पक्ष एक ऐसी सत्ता जो अपनी मनमानी करना चाहती है उस वक्त विपक्ष का दायित्व होगा, जिम्मेदारी होगी और उसका धर्म होगा कि पूरी मजबूती के साथ खड़े होकर आपको अपना संरक्षक मानते हुए अपनी बात रखें ।

आप निर्विरोध चुने गये हैं इससे मुझे, मेरे दल को, पूरे विपक्ष को और इन सबसे ऊपर उठकर हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय मुलायम सिंह यादव जी को बेहद खुशी है उनका यह मानना है कि अध्यक्ष पद पर जो भी आसीन हो उनसे न व्यक्तिगत विरोध होना चाहिए और न विचारों का विरोध होना चाहिए और न ही कोई ऐसी भाषा का इस्तेमाल होना चाहिए जिससे कभी भी उनके मन को यह लगे कि उनके सम्मान में कभी कोई कमी आ रही है । लेकिन इसी के साथ–साथ यह भी कहना चाहता हूँ कि क्योंकि ताली कभी एक हाथ से नहीं बजती सदर हर जा के नशीनस्त सदर अस्त, एक फारसी की कहावत है कि सदर जहाँ बैठेगा सदर ही होगा । आप तीसरी बार इस कुर्सी पर बैठे हैं और कल के तजुर्बों से, वह बहुतों के लिए कड़वे हो सकते हैं, बहुतों के लिए मीठे हो सकते हैं लेकिन वह भी एक यादगार है और खुद में इतिहास हैं । आपके फैसले इतिहास हैं । इसे यह सदन याद रखेगा, प्रदेश याद रखेगा । आगे भी आने वाले दिनों में मैं यह समझता हूं कि आपके तजुर्बों से हमें बहुत कुछ सीखने का मौका मिलेगा । हमारे जो नये सदस्य चुन कर आये हैं, आपने हमेशा उनको अवसर दिया है आने वाले दिनों में मीठा अनुभव हमें महसूस करने को मिलेगा । मैं आखिर में एक बार फिर आपकी कामयाबी पर, राजनीतिक कामयाबी पर, आपके यहां तीसरी बार अध्यक्ष चुने जाने पर मुबारकबाद देते हुए अपने दल और पूरे विपक्ष की तरफ से पूरे सहयोग का वादा करता हूं और उसकी जिम्मेदारी लेता हूं ।

(विपक्ष की ओर से मेजों की थपथपाहट)

मान्यवर, प्रदेश के वे करोड़ों लोग जिनकी आँखों में आँसू है, जिनके दिल में दर्द है, जो दुःखी हैं उन्हें अगर यहां से इन्साफ नहीं मिला और उनकी कराहटों को यहां दवा नहीं मिली तो सदन में बैठा हुआ एक–एक व्यक्ति मुजरिम होगा और आज नहीं तो कल उसे अपने गुनाहों की सजा मिलेगी । जो लोग फर्जी तौर पर यहां कुछ और वहां कुछ कहेंगे समाज उन्हें, खुली ऑख से देखेगा । राजनीति की आँख कभी झपकती नहीं उसके पलक नहीं होती । राजनीति की आँख देखती है और वह आँख जो तस्वीर ले लेती है उस तस्वीर का अक्श हमेशा अपने अन्दर कायम रखती है ।

मैं पुराने साथी के तौर पर, क्योंकि मुझे भी छठीं बार इस सदन में बैठने का मौका मिल रहा है । चन्द रोज का मेरा राज्य सभा का तजुर्बा भी है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि राज्य सभा का मेरा तजुर्बा ऐसा तजुर्बा है जिसने मुझे बहुत कुछ सीखने का मौका दिया है उसके बाद मैं विधान सभा में लौटा हूँ । मैं जरूर यह चाहता हूँ कि विधान सभा की कार्यवाही इन्तहाई नफासत और शालीनता से चले । इसकी सारी जिम्मेदारी विपक्ष की होगी । इसे साफ कर लेना चाहिये इसको साफ कर लेना चाहिए कि इसकी ज्यादातर जिम्मेदारी पक्ष पर होगी ।

अक्सर ऐसा होता है कि पक्ष ऐसा माहौल बनाने में कामयाबी हासिल कर लेता है जिससे विपक्ष उत्तेजित हो जाय । कोशिश की जायेगी कि माजी की तल्खियां दोहराई न जा सकें । विपक्ष बराबर से हिसाब लेने की ताकत रखता है । मैं यह कोई खुदा न करें, धमकी के तौर पर नहीं कह रहा हूँ अपना

अधिकार रख रहा हूँ, विपक्ष के एक–एक सदस्य के अधिकार को रख रहा हूँ क्योंकि मेरी जिम्मेदारी है आपसे निवेदन करने के लिए उनके अधिकारों की । हमने आपसे मिलकर कहा था और आज भी कहना चाहता हूँ कि आपको सम्मान देने में कोई कमी नहीं रहेगी और हम जो आपको देंगे उसके लिये उम्मीद करेंगे कि इजाफा करके आपसे वापिस मिलेगा । जो प्यार सम्मान आपको हमसे मिलेगा उससे बढ़ा हुआ हमें आपसे मिलेगा । इसके साथ ही फिर आपको बधाई और बहुत–बहुत धन्यवाद ।

* श्री राजनाथ सिंह–

अध्यक्ष महोदय, आप सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं । मैं अपनी तरफ से एवम् भारतीय जनता पार्टी विधान मंडल दल की तरफ से आपको हार्दिक बधाई देता हूँ । श्रीमन् आप पहली बार इस सदन के अध्यक्ष निर्वाचित नहीं हुए हैं तीसरी बार आप इस सदन के अध्यक्ष निर्वचित हुए हैं । जहां तक मेरी जानकारी है लगभग 8 वर्षों तक आपने इस सदन का संचालन किया है । केवल इस सदन का सदस्य ही नहीं बल्कि उत्तर प्रदेश का जन-जन आपसे परिचित है । आपकी कार्यकुशलता से, संसदीय कार्यों में जो आपका पांडित्य है, जन-जन को उसकी जानकारी है यह किसी से छिपा नहीं है 18 वर्षों से लगातार जो आपने संचालन किया है विधायिका के कामकाज में जो लोग रहे वह आपकी कार्यकुशलता योग्यता और प्रतिभा से अच्छी तरह परिचित हैं । लेकिन श्रीमन् आपको बधाई देने के पहले, मैं सामान्य शिष्टाचार के नाते नेता प्रतिपक्ष, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रीय क्रान्ति दल, अपना दल, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, समाजवादी जनता पार्टी, जनता पार्टी, यानि सरकार में जो दल शामिल हैं, उनके अतिरिक्त जो दल हैं, उन्होंने जिस स्वस्थ भूमिका का निर्वाह किया है, उसके लिये मैं अपनी तरफ से बधाई देता हूँ और कृतज्ञता ज्ञपित करता हूँ । नेता सदन और हम लोगों को तो करना ही था, लेकिन आप सबकी जो भूमिका रही है, वह सराहनीय रही है । इस सदन की स्वस्थ परम्परा को बनाये रखने में आप सबने योगदान किया है ।

श्रीमन्, हम सब जानते हैं प्रदेश को तो सरकार चलाती है, लेकिन सरकार को विधान सभा चलाती है और आज से नहीं, जब से प्रजातांत्रिक व्यवस्था इस देश में है, वैदिक काल और आज आधुनातनकाल, मैं कह सकता हूँ, इस प्रकार की संस्थाओं में संचालन की व्यवस्था रही है । वैदिककाल में भी सभायें होती थीं, समितियां होती थीं, गण होते थे यानि इस तरह की संस्थाओं में कोई संचालनकर्ता होता था और संचालनकर्ता स्वयं में एक संस्था होता था और आज भी विधान सभा, लोकसभा, राज्यसभा अथवा समिति हों, उनके भी संचालनकर्ता हैं । संचालनकर्ता का कितना महत्व होता है, इस प्रजातांत्रिक व्यवस्था में यह बताने की आवश्यकता नहीं है । क्योंकि मुझे स्मरण है, पिछली विधान सभा सबसे जटिल विधान सभा रही है और इस जटिल विधान सभा का आपने बहुत ही कुशलतापूर्वक संचालन किया है और मैं यह मानता हूँ कि सचमुच विधान सभा अध्यक्ष के अन्दर सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए, इंटेनसिव इनसाइड होनी चाहिए, व्यापक दृष्टिकोण होना चाहिए, दोनों का समन्वय मैंने आपमें पाया है । संवैधानिक और तकनीकी जटिलताओं को सुलझाने में आपने जहां पर अपनी सूक्ष्म दृष्टि का परिचय दिया है, वहीं पर दलगत भावना से ऊपर उठकर, सभी सदस्यों से समान व्यवहार करते हुये व्यापक दृष्टिकोण का परिचय भी दिया है और आप जैसा व्यक्ति ही सचमुच विधान सभा का सफलतापूर्वक संचालन कर सकता है, जिसमें सूक्ष्म और व्यापक दोनों दृष्टिकोण है ।

आपने यहां पर इस विधान सभा का संचालन कुशलतापूर्वक, सफलतापूर्वक किया है । आपने हमारे उत्तर प्रदेश की गरिमा को सारे हिन्दुस्तान में बढ़ाया है । क्योंकि देश के कई राज्यों में जाने का मुझे अवसर मिला है और जहां भी मैं गया हूं, आपकी लोगों ने चर्चा की है । आपने जो फैसले दिये, उन पर

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

कुछ लोगों ने शंका व्यक्त की, ऊंगली उठाई, लेकिन पूरा सदन अच्छी तरह जानता है, सुप्रीमकोर्ट ने भी उसको अपहोल्ड किया है। कानूनविद्, विधिवेत्ता, न्यायविद्, जितने भी शाब्दिक अलंकरणों से आपको विभूषित किया जाय, वह कम है। मैं जानता हूं कि शाब्दिक अलंकरणों से आपको विभूषित नहीं किया जा सकता है, आज आप विभूषित हैं तो अपनी कृतियों के माध्यम से विभूषित हैं। हम सबका सौभाग्य है कि एक बार पुनः इस नई विधान सभा के संचालन का दायित्व भी आपके कन्धों पर आया है। मैं आपको अपने दल की तरफ से विश्वास दिलाता हूं कि सदन के योग्य संचालन में हम सबका भरपूर सहयोग रहेगा। इससे ज्यादा कुछ न कहते हुये मैं पुनः अपनी तरफ से और अपने दल की तरफ से आपको हार्दिक बधाई देता हूं।

*श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष और माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी ने आपके निर्वाचन पर जो विचार व्यक्त किए हैं उससे मैं अपने दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भी जोड़ता हूं। मुझे केवल आपके बारे में इतना ही कहना है कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो किसी आसन पर पहुंच जाते हैं, किसी पद पर पहुंच जाते हैं तो उस आसन पर पहुंच जाने के बाद उस व्यक्तित्व की गरिमा बढ़ जाती है, पर कुछ लोग इतने महान होते हैं कि जिस आसन पर पहुंच जाते हैं तो उस आसन की गरिमा बढ़ जाती है। मैं आपको दूसरी श्रेणी में रखता हूं। आप जिस आसन पर बैठते हैं उस आसन की गरिमा बढ़ जाती है, यही मैं शब्दों के लिए इस्तेमाल करता हूं।

जिस विधान सभा के अध्यक्ष आप तीसरी बार हुए हैं, यह गौरव शायद उत्तर प्रदेश में किसी को न मिला हो। पुरुषोत्तम दास टण्डन, खेर साहब, सभी ने इस आसन को सुशोभित किया है। मान्यवर, यह भारत की सबसे बड़ी विधान सभा है और इसके साथ ही साथ कुछ देशों की लोक सभाओं से भी बड़ी उत्तर प्रदेश की यह विधान सभा है। यहां की एक-एक नजीर देश के लिए ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के लिए नजीर बन जाया करती है।

मान्यवर, एक बात मैं जरूर कहूंगा, पहले विधायक से जितनी अपेक्षा होती थी उससे आज के दौर में कई गुना अपेक्षाएं जनता की बढ़ गयी हैं। मैं विरोधी पक्ष में हूं, मैं विरोध पक्ष के विधायकों की व्यथा जानता हूं, जो मंत्री नहीं बने हैं, उनकी भी व्यथा मैं जानता हूं। पहले जो विधायक निर्वाचित होकर आता था, उससे बहुत कम अपेक्षा होती थी। आज के दौर में कोई लोक सभा सदस्य से नहीं पूछता, कोई प्रधान से नहीं पूंछता। गांव के खड़न्जे से लेकर बड़े-बड़े पुल के निर्माण की जिम्मेदारी आज विधायक की हो गयी है, यह सारी अपेक्षाएं जनता आज विधायक के ही सामने रखती है। ऐसी स्थिति में अध्यक्ष जी आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है। यह इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि इस आसन पर बैठकर आप अध्यक्ष ही नहीं हैं बल्कि इस पूरे सदन के संरक्षक भी हैं। इसलिए मैं अपेक्षा करूंगा कि इस सदन की गरिमा को ध्यान में रखते हुए यदि कोई सख्त कदम भी उठाने पड़े तो उठायेंगे।

मान्यवर, आपके साथ मुझे ब्रिटेन जाने का मौका मिला है, यहां मैंने आपके साथ इबादत पढ़ी है। जहां लोकतंत्र पर हमला हुआ था और राजा को अपनी ही मौत के लिए व्यवस्था देनी पड़ी थी। मैं आपसे यह नहीं कहूंगा कि आप किसी का सर कलम कर दें, बल्कि मैं यह चाहता हूं कि आप सर बचा लें। उत्तर प्रदेश के मंत्री के रूप में ही नहीं बल्कि आप इलाहाबाद उच्च न्यायालय के अधिवक्ता के रूप में भी जाने जाते हैं। आपकी कर्मठता और योग्यता पर किसी प्रकार का प्रश्न चिह्न नहीं उठाया जा सकता है।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मान्यवर, इस समय सत्तापक्ष और विपक्ष में कुछ ही मतों का अन्तर है, हम चाहते तो चुनौती दे सकते थे लेकिन हमने लोकतंत्र की गौरवशाली परम्परा को कलंकित नहीं होने दिया । मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि इसके बाद आपकी जिम्मेदारी बढ़ जाती है क्योंकि आपको केवल सत्तापक्ष ने ही नहीं चुना है, विपक्ष ने भी चुना है । इसलिए यह आपका नैतिक कर्तव्य बन जाता है कि आप विपक्ष के अधिकारों की भी रक्षा करें । मान्यवर, मैं कुछ बातों की ओर आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूं । कई परम्पराएं बन रही हैं, परन्तु कुछ परम्पराएं बिगड़ भी रही है । नियमावली में व्यवस्था है कि सदन 90 दिन चलना चाहिए लेकिन कभी 30 दिन, 32 दिन और कभी 34 दिन चलता है । यहां पर मुख्य मंत्री जी भी बैठी हैं, नेता प्रतिपक्ष भी यहां उपस्थित हैं । सभी सदस्यों से अनुरोध करूंगा कि अगर सदन 90 दिन चले तो जितनी भी अव्यवस्थाएं होती हैं वे कम की जा सकती हैं लेकिन हमारे पास जब समय की कमी होती है तभी सारी अव्यवस्थाएं पैदा होती हैं । तो आप सब लोग सरकार को 90 दिन के लिए सदन चलाने के लिए विवश करें और अध्यक्ष जी यह गारण्टी दें कि सदन 90 दिन चलेगा और मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि सदन व्यवस्थित चलेगा और संयमित चलेगा, आपकी आशा के अनुरूप चलेगा । एक बात मैं दुःख के साथ कहना चाहता हूं कि आज विधायक के जो अधिकार थे, जो गरिमा थी, उनका लोकतंत्र के प्रति जो सम्मान था वह दिन पर दिन कम होता चला जा रहा है लेकिन हमने अपने पक्ष के सदस्यों तथा भारतीय जनता पार्टी और सत्ता में बैठे अन्य सदस्यों के अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया है । यह बात मैं दावे के साथ कहना चाहता हूं कि अगर विधायकों का सम्मान नहीं होगा तो यह लोकतंत्र बहुत ज्यादा दिनों तक जिन्दा नहीं रह सकता है और मैं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से इस सम्बन्ध में हर सहयोग का आश्वासन देता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

यह तो अभी से नेता प्रतिपक्ष के अधिकारों का अतिक्रमण करने लगे हैं ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, हमारे जो नये नेता प्रतिपक्ष हैं मैं उनको भलीभांति जानता हूं और मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वह पूरी शक्ति के साथ सदन को चलाने में हमें सहयोग करेंगे, लेकिन मेरा कहना यह भी है कि मुझसे अच्छा आपको भी कोई नहीं जानता है इसलिए मैं आपसे यही अपेक्षा करूंगा कि सम्मानित विधायकों की रक्षा करते वक्त आप सत्ता पक्ष की तरफ नहीं देखेंगे और अपनी पीठ पर बैठे हुए पूर्वजों की नजीरों को देखेंगे ।

*ग्रामीण अभियन्त्रण सेवा मंत्री (श्री कौकब हमीद)–

मान्यवर, यह गर्व की बात है कि आप हमारे तीसरी बार अध्यक्ष हुए हैं और आपने हमेशा इस पीठ का गौरव बढ़ाया है । मुझे इत्तफाक हुआ है आपके साथ हिन्दुस्तान से बाहर जाने का भी और वहां पर आपकी जो तकरीरें हुयीं, आपका जो स्वागत और सम्मान हुआ है उस पर हमें गर्व होता है कि हमारे अध्यक्ष एक ऐसे अध्यक्ष हैं जिसको सुनने के लिए बाहर के भी लोग मौजूद होते हैं, यह बहुत बड़ी बात है । मान्यवर, मैं अपने दल की तरफ से और अपनी तरफ से यह यकीन दिलाता हूं कि आपको पूरा सहयोग मिलेगा और एक बात मैं जरूर कहना चाहता हूं कि जो मंत्री नहीं बने हैं कभी-कभी उनके साथ भी नाइंसाफी हो जाती है । वह अपनी पूरी बात नहीं कह पाते हैं तो मान्यवर, इसका भी ख्याल रखा जाये । जो सत्ता पक्ष के विधायक हैं उनकी बातें पूरी तौर से सुनी जाय, इससे अच्छा वातावरण पैदा होगा ।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

*श्री कल्याण सिंह–

माननीय अध्यक्ष जी, आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के संबंध में जो भावनायें माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता राष्ट्रीय लोकदल और नेता भारतीय जनता पार्टी श्री राजनाथ सिंह जी ने व्यक्त की हैं उन सबके साथ अपने को सम्बद्ध करते हुये आपको बधाई देना चाहता हूं।

आप छठीं बार एक ही सीट से निर्वाचित होकर आये हैं यह आपकी लोकप्रियता का प्रमाण है, तीसरी बार इस आसन पर विराजमान हुये हैं यह भी सभी माननीय सदस्यों के बीच में आपकी लोकप्रियता का एक पैमाना बनता है। मैं आपको इस बात के लिए बधाई देना चाहता हूं कि पूरे सदन ने आपको सर्वसम्मति से निर्वाचित किया है। किसी एक पक्ष ने आपको निर्वाचित नहीं किया है बल्कि सत्ता पक्ष और विपक्ष ने मिलकर किया है और एक बहुत ही स्वस्थ संसदीय परम्परा स्थापित की है। अब आप किसी एक दल के नहीं रह गये, किसी एक पक्ष के नहीं रह गये। आप समूचे सदन के संरक्षक हैं।

मैं प्रमोद कुमार जी की इस बात से सहमत हूं कि सदन कम से कम 90 दिन चलने की परम्परा शुरू हो सके तो यह बहुत अच्छी बात होगी। जितने ज्यादा दिन सदन चलेगा हंगामा कम होगा। जब कम दिन सदन चलता है तो लोगों को अपनी बात कहने का अवसर नहीं मिल पाता है जिससे हंगामें की स्थिति पैदा हो जाती है। अब तक यह नहीं हो पाया परन्तु इस सत्र से प्रारम्भ हो सके तो यह एक अच्छी परम्परा होगी। यह सदन 90 दिन चलना चाहिए। मान्यवर, यह विधान सभा न्याय मंदिर है। जहां तक सत्ता पक्ष और विपक्ष के अधिकारों का प्रश्न है, न्याय देने का प्रश्न है वह अपनी जगह महत्वपूर्ण है ही। मैं समझता हूं कि अनेक प्रकार की समस्यायें, जिनसे प्रदेश की महान जनता जूझ रही है, उसकी भी बड़ी अपेक्षायें हैं वह नजर लगाये बैठी है कि हमारा दुःख–दर्द दूर करने के लिए यह सदन किस प्रकार चलता है, और किस प्रकार कानून बनता है। तो मान्यवर, प्रदेश की जनता की बड़ी भारी अपेक्षायें आपसे और इस सदन से हैं।

श्रीमन् आपका व्यक्तित्व और कृतित्व ऐसा नहीं है कि मात्र इस आसन पर बैठ जाने से आपकी गरिमा बढ़ती है बल्कि सच तो यह है कि आपके कारण से इस आसन की गरिमा बढ़ी है। किसी कवि ने तुलसी के बारे में कहा है "कविता करके, तुलसी न लसयौ, कविता है लसयौ या तुलसी की कला।" अर्थात इस कुर्सी पर बैठकर आपकी गरिमा नहीं बढ़ी है बल्कि आपके बैठ जाने से इस कुर्सी की गरिमा बढ़ी है। यह विक्रमादित्य का आसन है। इस पर जब कोई व्यक्ति बैठ जाता है तो वह न्याय करता है और सदन के सभी माननीय सदस्यों का विश्वास है कि आपकी और से न्याय मिलेगा। आप संसदीय परम्पराओं के प्रकाण्ड पंडित हैं, सुविज्ञ विधि–वेत्ता हैं। आपने विधि पर जो पुस्तक लिखी है अब वह न्यायालयों में उद्धत की जाने लगी है। आपने अनेक प्रतिनिधि–मंडलों का प्रतिनिधित्व किया है। एक बात कहकर अपनी बात पूरी करना चाहता हूं। जैसा कि प्रमोद जी ने कहा मैं सत्ता पक्ष और विपक्ष में कोई भेद नहीं कर रहा हूं, सत्ता पक्ष और विपक्ष में जहां तक संख्या बल का प्रश्न है कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। इस प्रदेश का भला तभी हो सकेगा जब सत्ता पक्ष और विपक्ष मिलकर जनहित के कार्यों को करेंगे। मेरी तथा सभी माननीय सदस्यों की अपेक्षा है कि आप हमारे अधिकारों का संरक्षण करेंगे। चूंकि यह हमारे देश की सबसे बड़ी विधान सभा है निश्चित तौर पर एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करेगी जो केवल उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिये अनुकरणीय उदाहरण हो सकता है। मुझे विश्वास है कि आपके कुशल संचालन में, विशेष इतिहास बनाने में यह विधान सभा सक्षम होगी। मैं इन शब्दों के

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

साथ आपको पूरा विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारा और हमारे दल का पूरा-पूरा सहयोग आपके साथ रहेगा। धन्यवाद।

श्री राम स्वरूप सिंह (बिजनौर)–

माननीय अध्यक्ष महोदय, जो बधाई संदेश माननीय नेता सदन, माननीय विपक्ष के नेता, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता कांग्रेस दल, नेता राष्ट्रीय क्रांतिदल और लोकदल के नेताओं ने दिया है और जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उनसे अपने दल को सम्बद्ध करता हूं। आपकी विद्वता के बारे में जो तमाम बातें लोगों ने कहीं हैं, आप विद्वान हैं, जिस पोस्ट पर आप गये हैं वहां आपने विद्वता का उदाहरण पेश किया है। मैं ज्यादा न कहते हुये मैं सिर्फ एक आशा आपसे करूंगा कि आप इस सदन में विपक्ष को न्याय देने की कृपा करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको बधाई देता हूं। (मेजों की थपथपाहट)

*श्री श्याम सुन्दर शर्मा–

माननीय अध्यक्ष जी, नेता सदन नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता राष्ट्रीय क्रान्तिदल और अन्य दलों के नेताओं ने आपके चुने जाने पर जो विचार व्यक्ति किये हैं और जिन विचारों की अभिव्यक्ति की है उससे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। मैं आपको सौ-सौ बार नहीं, लाख-लाख बार बधाई देता हूं। नेता कांग्रेस पार्टी ने एक आध शंका यहां प्रकट की है। यह मैं उनकी बात से सहमति प्रकट करता हूं, कि कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो कुर्सी पर बैठने के बाद कुर्सी को सुशोभित करते हैं, वहीं संज्ञा आपको उन्होंने दी है। पिछला कार्यकाल आपका साबित करता है कि आपने पक्ष और विपक्ष से ऊपर उठकर एक-एक निर्णय पर निष्पक्षता की मुहर लगाई है जिसके लिये मैं आपको बधाई देता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि जो एक आध शंका यहां प्रकट की गयी है, भगवान आपको शक्ति देगा और एक-एक शंका निर्मूल साबित होगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको लाख-लाख बधाई देता हूं।

श्री राम गोविन्द चौधरी–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, माननीय नेता कांग्रेस (आई), माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय क्रांति पार्टी तथा अन्य दलों के नेताओं ने जो विचार व्यक्त किये हैं मैं उनसे, अपने को सम्बद्ध करता हूं। श्रीमन्, ऐसा इधर देखने को मिल रहा है कि सदन में संसदीय प्रक्रिया और संसदीय परम्पराओं का दिन प्रति दिन ह्रास होता चला जा रहा है। आप माननीय खेर जी के बाद पहले कवि हैं जो तीसरी बार अध्यक्ष पद को सुशोभित कर रहे हैं तो मुझे ऐसा लगता था कि संसदीय परम्पराओं का पूरा ध्यान इस बार रखा जायगा। माननीय कार्यकारी अध्यक्ष जी ने जो आपके नाम चयन का पर्चा पढ़ा उसमें 6 सेटों में आपके नाम का नामनेशन हुआ है।

एक में नेता सदन और उनके समर्थक दल के एक नाम थे। एक में भारतीय जनता पार्टी के नेता और उनके समर्थक उनके दल में एक साथ थे। एक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता और उनके दल में एक समर्थक के नाम थे। एक में राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी के नेता और उनके दल में एक समर्थक के नाम थे। लेकिन यह दुर्भाग्य है कि सदन स० पा० में सबसे बड़ा प्रतिपक्ष होने के बाद भी उसके प्रस्तावक व समर्थक का जिक्र नहीं किया गया। मैं इस बात को जानता हूं कि न तो सत्ता पक्ष की तरफ से और न आपकी तरफ से इस बात का प्रयास किया गया कि वह आपके नाम का प्रस्ताव करते मेरी जानकारी में है कि समाजवादी पार्टी पहले से ही विचार बना चुकी थी कि आपके नाम पर निर्विरोध अध्यक्ष का चुनाव होगा। मैं चाहूंगा कि आइन्दा से ऐसी प्रक्रियाओं पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

मैं भी छठी बार विधान सभा में चुनकर आया हूं । मैंने देखा है कि जब अध्यक्ष का चुनाव निर्विरोध निर्वाचन के द्वारा होता है तो नेता सदन और नेता प्रतिपक्ष अध्यक्ष को सदन में ढूंढ़ते हैं उनकी बांह पकड़कर आसन कुर्सी पर बिठाते हैं । इसलिए क्योंकि यह बड़ी जिम्मेदारी का पद है इस पर जिसको चुना गया है वह कहीं सम्भालने से कतरा न जाए इसलिए दोनों लोग मिलकर उनको अपने साथ हाथ पकड़कर आसन पर बिठाते हैं ताकि वह अपनी जिम्मेदारी को सम्भाल सकें । लेकिन न तो प्रतिपक्ष के नेता ने और न सदन के नेता ने बांह पकड़कर आसन पर ले जाने का काम किया । नेता कांग्रेस के टोकने पर नेता प्रतिपक्ष ने तो आपका हाथ पकड़ लिया लेकिन नेता सदन ने आपका हाथ अन्त तक नहीं पकड़ा । मैं निवेदन करना चाहता हूं कि सत्ता पक्ष का व्यवहार आपके प्रति जैसा भी रहे लेकिन विपक्ष ने इस बात का मन बनाया है कि संसदीय परम्पराओं और नियमावली का पूरा निर्वहन विपक्ष आपकी पीठ के निर्देश के अनुसार करेगा । श्रीमन्, जैसा कि सभी नेताओं ने कहा कि विधायकों के अधिकारों की रक्षा, उनके सम्मान की रक्षा व इस सदन के सम्मान की रक्षा, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के सम्मान की रक्षा आपके हाथ में है । हम सभी आपके निर्देशों के अनुसार कार्य करेंगे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं पुनः अपनी ओर से और अपने दल की तरफ से आपके निर्विरोध निर्वाचन पर बधाई देता हूं ।

श्री संजय गर्ग–

अध्यक्ष जी, मैं नेता सदन, नेता प्रतिपक्ष नेता भारतीय जनता पार्टी नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, नेता राष्ट्रीय लोकदल, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी, नेता समाजवादी जनता पार्टी, नेता उत्तर प्रदेश लोकतांत्रिक कांग्रेस और अन्य दलों के नेताओं ने जो अपने विचार रखे हैं उससे अपने आपको सम्बद्ध करते हुए तीसरी बार इस सदन का सम्मानित अध्यक्ष निर्विरोध चुने जाने पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं । आप जैसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी न्यायप्रिय व्यक्ति को पुनः इस पद पर बैठने का गौरव प्राप्त हुआ है । मान्यवर, किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि बुलन्दियों पर पहुंचना कोई कमाल नहीं है बुलन्दियों पर ठहरना कमाल होता है । मान्यवर, आपको लगातार तीसरी बार इस सदन में निर्विरोध रूप से अध्यक्ष चुना जाना प्रतिपक्ष और पक्ष की ओर से निर्विरोध आपका समर्थन करना, इस सर्वोच्च सदन के प्रति आपका विश्वास हासिल करना इस बात को प्रदर्शित करता है । सत्ता पक्ष और प्रतिपक्ष में बैठे सदस्य जो अपने क्षेत्रों से चुनकर आये हैं और सदन में बैठे हैं, आपका संरक्षण विधायिका की इस उच्च पीठ पर बैठकर हमको मिलता रहेगा तो निश्चित रूप से लोकतंत्र की सर्वोच्च विधायिका के समक्ष मांगों को रखकर संरक्षण प्राप्त करते हुए कुछ न कुछ रचनात्मक कार्यों में अपना योगदान दे पायेंगे ।

इस विधान सभा में तीन बार निर्विरोध अध्यक्ष चुने जाने का गौरव आत्मा राम गोविन्द खेर जी को मिला । चुनाव के माध्यम से भी इस सम्मानित पीठ का चुनाव हुआ जिसमें 1957 में आत्मा राम गोविन्द खेर और 1967 में जगदीश शरण अग्रवाल चुने गये । इस सर्वोच्च विधायिका में आपका तीसरी बार निर्विरोध रूप से अध्यक्ष चुना जाना आपकी बहुमुखी प्रतिभा, न्यायिक क्षेत्र में पकड़, आपका जो विज़न है उसके उपयुक्त है । कामनवेल्थ पार्लियामेन्टरी एसोसियेशन की एशिया की समिति के सदस्य होने के साथ-साथ विभिन्न मुल्कों में जाकर आपने संविधान की, लोकतंत्र की परम्पराओं का गूढ़ अध्ययन करके उसका लाभ पिछले सत्रों में विधान सभा के कार्य संचालन में दिया है ।

सम्मानित सदन इस बार भी आपसे आशा करता है कि आपके संरक्षण में, दिशा-निर्देश में आपका मार्गदर्शन और संरक्षण हम सभी सदस्यों को मिलता रहेगा । किसी तरह की कठिनाई, असंसदीय व्यवहार, असंसदीय भाषा की पुनरावृत्ति यहां न हो, इस बात का आश्वासन भी सदन, आपके संरक्षण में, आपको देना चाहता है । पहली बार चुनकर आये सदस्यों को संरक्षण आपके माध्यम से मिले । नियमावली के अन्तर्गत वे अपने क्षेत्र की समस्याओं को, बातों को सम्मानित सदन में रख सकें । पक्ष और प्रतिपक्ष के सदस्यों को अपनी समस्याओं का समाधान मिल सके । आपकी संकल्प शक्ति,

संवेदनशीलता, आपका कवि मन जैसा कि आपकी रचनाओं "मनोनुकृति" "आयुपंख" से झलकता है जो पीड़ितों की पीड़ा से द्रवित होता है। आपका संरक्षण इसके माध्यम से सभी लोगों को मिल सकेगा।

मान्यवर, संसदीय परम्पराओं का ह्रास हो रहा है। इस विधायिका के कार्यकाल के अन्तर्गत पूरे वर्ष में 90 दिन का उपवेशन होना चाहिए। शीतकालीन, वर्षाकालीन और बजट सत्र के अलावा आपके संरक्षण में जिस व्यवस्था को लागू करने की बात की जा रही थी कि दो महीने में 10 दिन का उपवेशन बुलाया जाय, आपके संरक्षण में हम चाहेंगे कि इस व्यवस्था को भी लागू किया जाय। अंत में, मान्यवर, मैं फिर से आपको निर्विरोध विधान सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर अपनी व अपनी पार्टी की ओर से और पूरे सदन की ओर से बधाई देता हूं।

*श्री राजा राम–

मान्यवर, आप को इस सदन का निर्विरोध रूप से अध्यक्ष चुने जाने पर बधाई देता हूं। इस सदन के नेता, नेता प्रतिपक्ष, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी, नेता कम्युनिस्ट पार्टी और लोकतांत्रिक पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल के नेताओं ने जो भी विचार व्यक्त किये हैं। उन सभी के साथ मैं अपने को सम्बद्ध करते हुए अपनी तरफ से, अपनी पार्टी की तरफ से आपको तीसरी बार निर्विरोध इस सदन का अध्यक्ष चुने जाने पर हार्दिक बधाई देता हूँ।

*श्री महबूब अली–

मान्यवर, देश की सबसे बड़ी विधान सभा की सबसे बड़ी कुर्सी पर बैठने के लिए जो विचार माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, राष्ट्रीय लोकदल, राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी आदि दूसरी पार्टियों के जो विचार आए हैं मैं अपने आपको उनके विचारों से सम्बद्ध करता हूँ। साथ ही यह अनुरोध करता हूँ कि जिस तरह से आज प्रदेश में त्राहि-त्राहि मची हुई है जनता में जितना आक्रोश है, विपक्ष के सदस्यों और सदन के सभी सदस्यों की तरफ से आपके सामने हर तरह के प्रश्न, जनता से संबंधित रखे जाएंगे, मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि क्षेत्र की समस्याओं को हम आपके सामने रखेंगे उनका आप निराकरण करेंगे, साथ ही मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी की ओर से आपको आश्वस्त करता हूँ कि हर तरह का सहयोग आपको हम सबसे मिलता रहेगा।

*डा० राधा मोहनदास अग्रवाल–

मा० अध्यक्ष, माननीय नेता सदन, माननीय नेता विरोधी दल, आज दूसरा दिन मुझे शपथ लिए हुए हुआ है, आज तक मैं भी सामान्य नागरिक की तरह इस विधान सभा को देखता था और एक अलग सी इमेज इस विधान सभा को लेकर मेरे सामने उभरती थी, लेकिन जिस प्रकार से सबने मिलकर आपके निर्विरोध चुना है संभवतः उत्तर प्रदेश की विधान सभा एक नयी प्रकार की राजनीति करने जा रही है। आपके लिए बहुत सारे शब्द कहे गये। आप भी छठवीं बार चुनकर आए देश की सबसे बड़ी विधान सभा के सबसे बड़े अध्यक्ष हुए, इस पर चर्चा हुई–

"निन्दतु नीति निपुणः यदि वा स्तवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्ठम्
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा
न्यायात् पथः प्रविचलन्ति पद न धीरा :"

जो न्याय पर चलने वाले लोग हैं वह यदि मौत भी आ जाए तो न्याय पर चलने वाले लोग अपनी बात से विचलित नहीं होते। बहन मायावती ने जिस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया उससे ऐसा लगा कि

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

तीसरी बार विधान सभा का अध्यक्ष होना और सुश्री मायावती का तीसरी बार मुख्य मंत्री होना कहीं न कही कोई नई चीज होने जा रही है । राष्ट्रीय लोकतंत्र की यही पहचान है हम इसी को मानते हैं । हमारा आग्रह है अध्यक्ष जी आपसे आप लोकतंत्र की पहचान बनायेंगे । मिलकर उठने, मिलकर चलने और मिलकर विचार करके समाज का निर्माण करेंगे । माननीय राजनाथ सिंह जी मैं कहना चाहूँगा :–

"संद्दध्व् सवद्हव् सं वोमनान्सि जानताम्

देवा भागम्यथा पूर्वे सजांनानमाउपासते"

हम सब मिलकर बैठकर विचार करें । राम गोविन्द जी खड़े थे मैं कहना चाहता हूँ आप इन बड़े–बड़े दलों के चक्कर में हम छोटे दलों को भूल न जायें । आप इलाहाबाद से आते हैं वहां की अजीब संस्कृति है गंगा यमुना मिलकर सरस्वती को विलीन कर देती हैं । अतः आपसे अनुरोध है कि हम छोटे दलों को भी जब कार्यक्रम का संचालन हो, ध्यान में रखें । एक बार पुनः मैं आपको बधाई देता हूँ ।

* श्री दीनानाथ कुशवाहा–

मान्यवर, तीसरी बार आप विधान सभा के अध्यक्ष चुने गये हैं इसके लिए मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ । मान्यवर, यह सदन प्रदेश की 16 करोड़ जनता का दर्पण है और प्रदेश की जनता को यहां से संदेश जाता है । आज पूरे प्रदेश की जनता इस कार्यक्रम को देख रही है और प्रदेश की जनता को अब उम्मीद है कि हमारे विधायक जो विधान सभा के अन्दर हैं वह हमारी समस्याओं को आपके समक्ष रखेगे । जो दर्पण सामने दिखायी दे रहा है यह प्रदेश की जनता को तभी खुशहाली के रास्ते पर ले जायेगा जब साफ सुथरा हो । अगर इसमें कालिख लगी हुई है तो हम जिस उम्मीद से विधान सभा के अन्दर आये हैं, उन जनता की भावनाओं पर हम खरा नहीं उतरेंगे ।

मान्यवर, आपने तो जो दुनिया के लोकतांत्रिक पद्धति के देश हैं उन देशों का आपने भ्रमण किया है और उन देशों में जो चुनाव की प्रक्रिया है उसके बारे में भी आपका गहरा अनुभव है । मैं यह कहना चाहता हूं कि जो तेहरवीं विधान सभा का स्वरूप था और जो चौदहवीं विधान सभा का स्वरूप है उसमें अन्तर है । आज का प्रतिपक्ष 13वीं विधान सभा की तरह नहीं है । आपके बारे में हमारे माननीय सदस्यों ने जो बताया है, नेता प्रतिपक्ष, नेता कांग्रेस पार्टी, नेता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी आदि ने जो बताया है, मैं उम्मीद करता हूँ कि आप जन भावनाओं और इस सदन की जो गरिमामयी परम्परा है, उसमें खरे उतरेंगे । आपकी निष्पक्षता और लोकप्रियता, आपकी जो गौरवमयी संस्कृति, इस पद पर आसीन होने से पहले जो आपने समाज सेवी संगठनों में काम किया है, आपका व्यक्तित्व इस दर्पण के अन्दर दिखाया है, मुझे उम्मीद है आप इसमें खरे उतरेंगे । एक कहावत है कि "निन्दक नियरे राखिये आँगन कुटी छवाये, बिना पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ।"

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार पुनः आपको अपनी तरफ से तथा अपने दल की तरफ से बधाई देता हूँ और विश्वास करता हूँ कि आप जन भावनाओं के अनुरूप कार्य करेंगे । आप इस सदन की गरिमा को ध्यान में रखते हुए काम करेंगे । इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ ।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय अध्यक्ष महोदय, तीसरी बार उत्तर प्रदेश विधान सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर मैं आपको हार्दिक बधाई देता हूँ । मान्यवर, उत्तर प्रदेश विधान सभा वह विधान सभा है, जो दुनिया के पांचवे मुल्क के बराबर उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करती है । मान्यवर, यह गौरव खेर साहब को प्राप्त हुआ था उसके बाद तीसरी बार निर्वाचन का आपको गौरव प्राप्त हुआ है । एक संयोग भी है

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन भी इलाहाबाद से आते थे आप भी इलाहाबाद से हैं। मान्यवर, और संयोग से मैं भी इलाहाबाद का हूँ। हमारा आपका विधान सभा क्षेत्र भी अगल-बगल लगा हुआ है। मान्यवर, इस विधान सभा में बहुत से माननीय नये सदस्य चुनकर आये हैं मैं उनको बधाई देता हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि इस विधान सभा में आपके अध्यक्ष की कुर्सी पर विराजमान रहते हुए वह बहुत कुछ सीख कर जायेंगे। मान्यवर, पिछली बार तेरहवीं विधान सभा में आपने कई कीर्तिमान बनाये। उसकी चर्चा जब भी होगी, उसमें आपकी चर्चा जरूर होगी। मान्यवर, मुझे उम्मीद है कि जो नये सदस्य हैं उनको यहां बोलने का पर्याप्त मौका मिलेगा, समय मिलेगा।

प्रमोद कुमार जी ने एक बात कहीं कि 90 दिन का सदन होना चाहिए। मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि आपके निर्देशन में हर दो माह पर 10 दिन का उपवेशन बुलाने की बावत इस सदन में घोषणा की गयी थी। मैं चाहता हूं कि सदन व्यवस्थित रूप से चले और यह वाद–विवाद यहां पर ऐसा हो कि एक बार फिर उत्तर प्रदेश विधान सभा की बैठकों में जहां कभी लोक सभा से भी बेहतर चर्चा होती थी वह चर्चायें हों (विपक्ष की ओर मेजों की थपथपाहट) एक बात के लिए समूचे विपक्ष को बधाई दूँगा कि कदाचित समूचे विपक्ष ने एक मत होकर जो सरकार की तरफ से आपका नाम आया उसको सभी ने अनुमोदित किया और यह विश्वास दिलाया कि पूरे विपक्ष का आप पर विश्वास है पूरा समर्थन विपक्ष ने किया है। विपक्ष के सदस्यों को सदन में पर्याप्त समय मिलना चाहिए यह एक बात है। माननीय श्री कौकब हमीद जी ने एक बात कहीं कि सत्ता पक्ष के सदस्यों को समय मिलना चाहिए। सत्ता पक्ष के सदस्यों को समय मिले हम उसके खिलाफ नहीं है। लेकिन पहला दायित्व विपक्ष का होता है क्योंकि सरकार की जो नीतियां हैं जो उसका दिग्दर्शन है उसके खिलाफ विपक्ष की बात होती है। विपक्ष को उन बातों को यहां उठाना पड़ता है। यह तभी संभव है जब सदन के उपवेशन हो। पिछले बजट सत्र में हमने देखा मात्र 32–33 दिन के उपवेशन हुए हैं जबकि 45 दिन के कम से कम उपवेशन होने चाहिए। मैं यह उम्मीद करूँगा कि आपके नेतृत्व में इसमें सुधार होगा। आप राष्ट्र मण्डल देशों में गये हैं। जहां आपने प्रदेश के नाम को गौरवान्वित करने का काम किया है। पूरे देश में आप एक ऐसे स्पीकर हैं एक ऐसे अध्यक्ष हैं, जिन्होंने एक शुरूआत की और जिसका अन्य प्रदेश अनुसरण कर रहे हैं। मान्यवर, वह परम्परा चलती रहेगी और हमारे तमाम माननीय सदस्यों को यह मौका मिलेगा कि वह देख सकें कि लोकतंत्र कहां चल रहा है कैसे चल रहा है उससे उनको सीखने का मौका मिलेगा।

मान्यवर, आप जहां उस सर्वोच्च आसन पर विराजमान हैं उसी के साथ आप मान्यवर, विधिवेत्ता भी है और एक विधिवेत्ता के नाते मान्यवर, मैं यह जरूर चाहूंगा कि आप इस सदन में ऐसी परम्परा बनवायें कि जो एक वाद–विवाद का सिलसिला खत्म होता चला जा रहा है और पढ़ने-लिखने का औचित्य भी धीरे–धीरे समाप्त हो रहा है, मान्यवर, फिर से पुनः स्थापित हो और हमारे प्रदेश की 14वीं विधान सभा का वह गौरव फिर से प्राप्त किया जाये, यह आपके संरक्षण में ही संभव है।

मान्यवर, मैं आपको बधाई देते हुए यह चाहता हूं कि यह 14वीं विधान सभा अपना पूरा कार्यकाल पूरा करें। सभी माननीय सदस्य यह चाहते हैं कि 14वीं विधान सभा अपने पूरे कार्यकाल तक चले। इस विधान सभा से बहुत सी नयी बातें निकली हैं जिनका अनुसरण दूसरे प्रदेशों के लोग कर रहे हैं। मैं इस बात के लिए भी आपको बधाई दूंगा कि आप कवि हृदय भी है कभी–कभी उत्तेजना के क्षण भी विधान सभा में आते रहते हैं तब मैं चाहूंगा कि उस उत्तेजना के क्षण को शान्त करने में भी आपकी अहम् भूमिका होनी चाहिए बहुत–बहुत बधाई मान्यवर, और मैं यह उम्मीद करता हूं कि यह विधान सभा, जहां जिस विश्वास के साथ आपको एकमत से उस सर्वोच्च कुर्सी पर बैठाया है उसकी कार्यवाहियां आने वाले समय में स्वयं परिलक्षित होंगी। धन्यवाद।

स्वामी ओइमवेश–

माननीय अध्यक्ष, माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता राष्ट्रीय लोकदल, अन्य सभी राजनीतिक पार्टियों के नेतागण व जिन भी महानुभावों ने आपके सम्मान में आपको बधाई देने में अपने विचार रखें हैं मैं अपने आपको उन सभी विचारों से संबद्ध करता हूं और आपको तीसरी बार अध्यक्ष बनने पर हार्दिक बधाई देना चाहता हूं।

मान्यवर, आप जब–जब भी इस कुर्सी के ऊपर बैठे हैं तब-तब आपने इस कुर्सी की शोभा बढ़ायी है। आपका व्यक्तित्व आपकी जानकारी, आपके नीतिगत निर्णय जहां आपने अपनी सूझ-बूझ के साथ किये हैं वहां आपने अपने हर माननीय सदस्य की भावनाओं को ध्यान में रखा है। मैं ज्यादा कुछ न कहते हुए सभी नेताओं ने आपके सम्मान में सारे शब्दों का प्रयोग किया है कोई शब्द ऐसा नहीं बचा है जो आपके सम्मान में न कहा गया हो। मैं आपको महात्मा गांधी के उन शब्दों को याद दिलाना चाहता हूँ जब जवाहर लाल नेहरू को गोडसे ने गोली मार दी थी। (शोर)

श्री अम्बिका चौधरी–

ये क्या कह रहे हैं ?

(व्यवधान)

स्वामी ओइमवेश–

हां यह गलत हो गया महात्मा गांधी को गोली मार दी थी। उस समय महात्मा गांधी ने जवाहर लाल नेहरू को एक बात कही थी कि जब-जब भी आपके सामने कोई ऐसा धर्म संकट आये जिसका फैसला न कर पाओ तो उस समय आप उस खड़े मजदूर को देखो जो मेहनत करके फावड़ा चला करके जिसकी आंखें धंस गयी हों, जिसकी कमर मुड़ चुकी हो अगर उसकी तस्वीर को एक सेकेण्ड के लिए देखो और उसके लिए कुछ करो तो गरीबों के, किसानों के हित में होगा।

मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि आपका जो भी फैसला हो वह गरीबों के लिए होना चाहिए। तो मैं समझूंगा कि आप इस कुर्सी को चार-चांद लगायेंगे। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि आप शतायु हों, 100 साल तक जियें इस सदन को चलाते रहें। मैं पुनः तीसरी बार अध्यक्ष बनने पर आपको बधाई देना चाहता हूं, धन्यवाद।

* श्री घनश्याम शुक्ल–

माननीय अध्यक्ष, मैं अपने आपको नेता सदन, नेता विरोधी दल, नेता भारतीय जनता पार्टी, नेता लोकदल से सम्बद्ध करते हुए आपको तीसरी बार अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठने के लिए बहुत-बहुत हार्दिक बधाई देता हूं, धन्यवाद देता हूं। मान्यवर, सदन की कुर्सी पर आप तीसरी बार अध्यक्ष के रूप में बैठे हैं। अध्यक्ष के रूप में रहते हुए आपने उत्तर प्रदेश विधान सभा का नाम केवल उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि यहां से बाहर जा करके, भारत से भी बाहर जाकर के विदेशों में उत्तर प्रदेश विधान सभा का नाम रोशन किया है।

मान्यवर, मैं आपसे अपेक्षा करता हूं एक मेरे मन के अन्दर पीड़ा है क्योंकि हमारे जो नेता विरोध में बैठे हैं वह अच्छा भाषण करते हैं ज्यादा समय अपने भाषण में खत्म करते हैं।

---

* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

(शोर)

मैं आपसे अपेक्षा करूंगा कि जो खाली भाषण में समय जाया करते हैं उनको समय देने के बजाय नये सदस्य जो निर्वाचित होकर आये हैं उनको भी अपना समय देने का अवसर प्रदान करेंगे । आपके अध्यक्ष चुने जाने पर पुनः बहुत-बहुत बधाई देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं ।

श्री अध्यक्ष–

माननीय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता भारतीय जनता पार्टी, माननीय नेता भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, माननीय नेता राष्ट्रीय क्रांतिदल और अनेक विभिन्न राजनीतिक दलों के सम्मानित नेतागण, माननीय सदस्यगण, आज आपने उत्तर प्रदेश की चौदहवीं विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध निर्वाचित होने पर मुझे अपनी शुभकामनाएं दीं । मैं इसके लिए पूरे सदन के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं । लेकिन आपकी शुभकामनायें अकेले नहीं मिली हैं । आपकी शुभकामनाओं के साथ मुझे सहयोग का भी आश्वासन मिला है । यह हमारे लिये हर्ष और संतोष की बात है । वास्तव में इस सदन की गरिमा माननीय सदस्यों के सहयोग के ऊपर ही निर्भर करती है । हमारी संसदीय परम्परायें आज जो हैं, उनका निर्माण एक पक्षीय नहीं हुआ है । इन स्वस्थ संसदीय परम्पराओं के निर्माण में सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों का सहयोग रहा है । दोनों एक दूसरे के पूरक हैं ।

हम सब जो विधान सभा के सदस्य चुनकर आये हैं, हमारा दायित्व मात्र इस सदन के सभा मंडप के अन्दर ही नहीं हैं । हमारा दायित्व इस सभामंडप के बाहर, विधान सभा के परिसर के बाहर भी है । आज हम समाज की ओर दृष्टि डालते हैं तो संसदीय लोकतंत्र के प्रति आस्था तो दिखाई पड़ती है, लेकिन विभिन्न कारणों से उसमें डगमगाहट भी दिखाई पड़ती है । यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम विधान सभा के, विधान मंडलों के, सदस्य अपने आचरण और व्यवहार से प्रदेश की सामान्य जनता की, इस लोकतांत्रिक व्यवस्था में विशेषकर संसदीय लोकतंत्र में आस्था बनाये रखें, आस्था प्रज्वलित किये रहें । यह तभी सम्भव हो पायेगा जब इस सदन में हम सब एक दूसरे के साथ, सहयोग के भाव के साथ, विश्वास की भावनाओं को मन में भरकर अपनी बात को निर्भीकतापूर्वक रखने का प्रयास करें ।

यह सदन उत्तेजना फैलाने का माध्यम नहीं है । यहां अपने-अपने सिद्धान्तों के प्रति समर्पण के साथ दृढ़तापूर्वक अपने विचार रखने का हमें अवसर मिलता है और इसलिए मत–विभिन्नता के साथ, हम एक स्वस्थ वातावरण में, जिन समस्याओं को यहां उठाया जाता है, उसका निदान ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं । इस दिशा में मुझे विश्वास है कि सदन के सभी सदस्य मेरा और एक दूसरे का सहयोग पाने का पूरा प्रयास करेंगे । हम सब इस बात से अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं कि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और इसीलिये हमसे अपेक्षायें बढ़ जाती हैं । इतने बड़े लोकतंत्र में हम सबसे बड़े प्रदेश हैं, ऐसा प्रदेश जिसकी गौरवशाली परम्परा रही है, जहां के विधायकों, सांसदों और अध्यक्षों ने संसदीय लोकतंत्र की स्वस्थ परम्पराओं के निर्माण में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है । यदि उस पृष्ठभूमि में इस कार्यवाही में भाग लेंगे तो निश्चित रूप से इस सदन की गरिमा में वृद्धि होगी और यह सदन और भी अधिक सफलतापूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकेगा । सभी माननीय नेताओं ने जिन्होंने आज मुझे शुभकामनायें दी हैं, कुछ अपेक्षायें भी की हैं । सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों का दायित्व समान है, लेकिन विपक्ष का दायित्व, जिन समस्याओं को वह उठाना चाहते हैं, गम्भीरतापूर्वक उठाकर सत्ता पक्ष से जवाबदेही प्राप्त करना भी है और सत्ता पक्ष भी विपक्ष के माध्यम से इस प्रकार अपने उत्तरदायित्व को पूरा करता है ।

हमारे संविधान की यही कल्पना है, जिसमें कहा गया है कि मंत्रि-परिषद् इस सदन के प्रति उत्तरदायी होगी । इस सदन का मतलब सारे प्रदेश की जनता, जिन्होंने निर्वाचित करके हम माननीय

सदस्यों को यहां भेजा है । ऐसे उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिये विपक्ष सत्ता पक्ष को प्रेरित करने का प्रयास करता है तो सत्ता पक्ष को भी इससे परेशान होने की बात नहीं है.. लेकिन इस बात की बाध्यता पर बल दिया जाता है वहीं मैं सब से अनुरोध करता हूं, विपक्ष के सदस्यों से भी, कि वे सत्तापक्ष के सदस्यों की भी बात सुनें । उनका भी जो दृष्टिकोण हो उसे भी जाने उसके बाद कोई व्यवस्था आये तो अच्छा होगा ।

अध्यक्ष के सामने बड़ी कठिनाइयां भी होती है । वह चाहता है कि हमारा सदन नियमों के अनुसार, संविधान के प्राविधानों के अनुसार और अनुशासित ढंग से चले । अध्यक्ष को विशेषाधिकार अलग से नहीं है । एक संदर्भ में ब्रिटेन के एक स्पीकर ने कहा था कि "मेरी कोई आंख नहीं है, जो सदन देखता है वहीं मैं देखता हूं । मेरे कोई कान नहीं, जो सदन सुनता है वही मैं सुनाता हूं, मेरी कोई जिह्वा नहीं, जो सदन बोलता है, वही मैं बोलता हूं ।" अध्यक्ष तो सदन का प्रतिनिधि है । यदि आप सहयोग देंगे तो निश्चित रूप से सदन की कार्यवाही ठीक ढंग से संचालित हो सकेगी और आप अपनी बात प्रभावशाली ढंग से रख सकेंगे । विचारों की अभिव्यक्ति के लिए जो हमारी प्रक्रिया नियमावली बनी है यदि हम उसका पालन करते रहेंगे तो किसी को किसी प्रकार की शिकायत करने का मौका नहीं मिलेगा ।

माननीय श्री प्रमोद कुमार और माननीय श्री कल्याण सिंह जी ने इस बात की अपेक्षा की है कि यदि सदन अधिक से अधिक दिनों तक चले तो हमारे सदस्यों को बहुत अवसर प्राप्त होंगे । इससे न तो हमें देर तक बैठने की आवश्यकता पड़ेगी और न जल्दबाजी में सदन में कटुता और अशान्ति का अवसर पैदा होगा । मैं इसके लिए माननीय नेता सदन से अनुरोध भी करूंगा कि वे इस बात का प्रयास करें, जिससे इस सदन के उपवेशनों की संख्या बढ़ सकें । इससे हमारे विचारों की अभिव्यक्ति भी हो जायेगी ।

अभी माननीय श्री राम गोविन्द चौधरी जी ने कहा कि हम हाथ पकड़ कर नहीं आए । हम तो कदम से कदम मिलाकर इस पीठ तक आए हैं । माननीय नेता प्रतिपक्ष ने हाथ पकड़ा तो दूसरी ओर कदम से कदम मिलाकर चले, जो एक दूसरे के अनुपूरक हैं । इसी प्रकार से आप प्रदेश की समस्याओं के समाधान के लिए, इस देश की तमाम उन चुनौतियों के निदान के लिए जिनका माननीय नेता प्रतिपक्ष ने उल्लेख किया है, कार्य करेंगे और जो गरीब हैं, जिनके आंसू बह रहे हैं, उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करेंगे, उनके दुख-दर्द को समझेंगे और उन्हें दूर करने का प्रयास करेंगे, तो यह उत्तर प्रदेश को निश्चित रूप से स्वर्णिम भविष्य की ओर ले जाने का कार्य होगा ।

मैं अपेक्षा करता हूं कि सदन की कार्यवाही चलाने में सभी माननीय सदस्यों का सहयोग मिलेगा, चाहे वह सत्ता पक्ष के हों या विपक्ष के हों । सत्तापक्ष से मैं विशेष रूप से आग्रह करना चाहता हूं और विशेष रूप से जो मंत्रि-परिषद् के सदस्य पहली बार मंत्री बने हैं, हो सकता है उन्हें मार्गदर्शन की कुछ आवश्यकता हो तो कहीं से भी उन्हें मार्गदर्शन प्राप्त हो, चाहे पुस्तकों के माध्यम से या मौखिक रूप से हो, इसके लिए उन्हें कोई हिचक नहीं होनी चाहिए ताकि अनुभवहीनता इस विधान सभा की कार्यवाही के संचालन में आड़े न आए । जहां से भी ज्ञान प्राप्त हो, पत्रावलियों के माध्यम से, अधिकारियों से या अपने मंत्रि-परिषद् के सहयोगियों से, उसे प्राप्त करें । यदि वह तैयार होकर सदन में आयेंगे तो विपक्ष को उन्हें आक्षेपित करने का कोई हथियार नहीं मिल पायेगा ।

विपक्ष से भी कहना चाहता हूं कि संयम और धैर्य हमारी शक्ति होती है । कुछ को अवसर मिल पायेगा, कुछ हाथ उठे रह जायेंगे, लेकिन इससे अधीर होने की आवश्यकता नहीं है । आवश्यकता इस बात की है कि हमारा आचरण, हमारी वाणी, हमारी भाषा संयमित हो । इससे हमारे सदन की मर्यादा बढ़ेगी और सदन की मर्यादा से ही हमारी मर्यादा है ।

बहुत से माननीय सदस्य इस बार नये चुन करके आये हैं। करीब 100 से अधिक संख्या है, जो पहली बार निर्वाचित हुए हैं। मेरा उनसे यही कहना है कि अपने से जो वरिष्ठ सदस्य हैं उनके साथ बैठ कर, उनसे बातचीत कर, इस सदन की कार्यवाही कैसे चलती है इसकी जानकारी हासिल करें। तभी वह अपने दायित्वों का निर्वहन करने में अधिक सफल हो पायेंगे। अन्त में मैं आप सबसे केवल इतना कहना चाहता हूं कि मैंने अभी तक संविधान के प्राविधानों के अनुसार, कानून के अनुसार सदन को चलाने का प्रयत्न किया है और शांतिपूर्वक, निष्पक्षतापूर्वक, सम्मानपूर्वक और कानून को ध्यान में रखते हुए आगे भी इस सदन की गौरवशाली परम्पराओं की पृष्ठभूमि में अपने कर्तव्यों का निर्वहन करूंगा। इसमें किसी को भी किसी प्रकार की कोई आशंका नहीं होनी चाहिए।

एक बार मैं आप सबको पुनः धन्यवाद देता हूं और यह भी बताता हूं कि कल 11.00 बजे विधान सभा और विधान परिषद् का एक संयुक्त अधिवेशन होगा जिसमें महामहिम राज्यपाल का अभिभाषण होगा। तत्पश्चात 12.30 मिनट पर इस विधान सभा की कार्यवाही आरम्भ होगी। इसी के साथ मैं आप सब लोगों से विदा लेता हूं, कल फिर मिलूंगा।

एक बार फिर आप लोगों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

अब हम उठते हैं।

(इसके बाद सदन का उपवेशन 2 बजकर 35 मिनट पर अगले दिन के 12 बजकर 30 मिनट तक के लिये स्थगित हो गया)

लखनऊ : **राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय,**

दिनांक : 14 मई, 2002 सचिव, विधान सभा,

उत्तर प्रदेश।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

पी० एस० यू० पी०–एल० 149 विधान सभा (258)–2002–813 प्रतियां (डी०टी०पी०)।